MPEDA

समाचार पत्र खंड VI संख्या 4&5 जुलाई-अगस्त 2018

पृष्ठ 3

विश्व महासागर दिवस पर समुद्री तटों में स्वच्छता अभियान

पृष्ठ 7

स्क्वेयर मेष कोड-एंड की बुनाई पर कौशल विकास

पृष्ठ 29

प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स के विरुद्ध जागरूकता अभियान

ISSN 0245-7059

www.mpeda.gov.in

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

विषय सूची

खंड. VI, संख्या. 4&5, जुलाई-अगस्त 2018

03
विश्व महासागर दिवस पर समुद्री तटों में स्वच्छता अभियान

06
'विश्व पर्यावरण दिवस' और 'विश्व महासागर दिवस' मनाया गया

07
स्क्वेयर मेष कोड एंड की बुनाई पर कौशल विकास

09
'समुद्र में सुरक्षा' पर जागरूकता अभियान

18
भारत के चुनिंदा बंदरगाहो पर जुलाई 2018 में उतरी मत्स्य खेप की खास बातें

23
जीआईएफ़टी कल्चर का संग्रहण प्रदर्शन

27
कन्याकुमारी में जलकृषि की संभावनाएं खोजना

29
प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स पर जागरूकता अभियान

34
आलंकारिक मत्स्य प्रजनन के विकास के लिए नेटवर्क का शुभारंभ

40
उन्नत 'फिशिंग गियर' बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस प्रकाशन के विद्वान लेखों में व्यक्त विचार एमपीईडीए के विचार नहीं है, यह सिर्फ लेखक के विचार हैं।
इस प्रकाशन के विद्वान लेखों के जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों पर निहित हैं,
न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय गण की ज़िम्मेदारी है।

एम.पी.ई.डी.ए
खंड VI / संख्या. 4&5 / 2018 जुलाई-अगस्त समाचार पत्रिका

संपादक मंडल
श्री टी. डोला शंकर, आईओएफ़एस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के.वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार
(विकास एवं ए व आई) (प्रभारी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय सहयोग
बिवर्ल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कड़वन्त्रा,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाड़ी

www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए हाऊस, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाऊस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036

पर मुद्रित
प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017

के.एस. श्रीनिवास आईएएस
चेयरमैन

प्यारे दोस्तों,

जैसा कि आपको मालूम है कि मैंने समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण में 13 अगस्त, 2018 को कार्यभार ग्रहण कर लिया है। निर्यात की मात्रा और निर्यात से होने वाली आमदनी दोनों ही मामलों में हम हर साल नए कीर्तिमान स्थापित करते जा रहे हैं। मैं मानता हूं कि समुद्री उत्पाद का हमारा क्षेत्र हितधारकों के उत्साह और उनके द्वारा लाए गए नवाचार के साथ अपनी गतिविधियों के विविध क्षेत्रों में जीवन्तता बनाए हुए है।

हालांकि इस क्षेत्र के प्रारंभिक अध्ययन से मुझे ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र को कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है जिससे इसके तीव्र विकास में बाधाएं आ रही हैं। एमपीईडीए (MPEDA) का लक्ष्य होगा कि संसाधनों के सतत विकास पर जोर देकर तथा उत्पादन व प्रसंस्करण की शृंखला में सर्वोत्तम तरीके अपना कर इन बाधाओं को दूर किया जाए।

अमेरिकी प्रशासन अपने समुद्री खाद्य आयात निगरानी कार्यक्रम (एसआईएमपी) को इस साल के अंत तक श्रिम्प और एबालोन तक विस्तारित करने जा रहा है। भारत से समुद्री खाद्य के रूप में अमेरिका को आयात होने वाला प्रमुख उत्पाद श्रिम्प ही है, लिहाजा अमेरिकी नीति में हो रहा यह बदलाव हमारे लिए बहुत अहम है। इसीलिए एमपीईडीए ने एसआईएमपी हितधारकों के बीच सूचना प्रसार की अपनी गतिविधियों में तेजी ला दी है।

किसी भी उत्पाद के विपणन के लिए बाजार की तलाश एक महत्वपूर्ण घटक होता है। यह घटक गुणवत्ता के साथ-साथ उत्पाद के प्रति ग्राहक का भरोसा और स्वीकार्यता के लिए भी प्रेरित करता है। अधिकांश बाजारों की लेबलिंग की आवश्यकताएं कम से कम उत्पादक के स्तर पर समुचित जानकारी की मांग करती हैं। हालांकि विकसित बाजारों की प्रवृत्ति होती है कि मूल्य शृंखला का पता लगाते हुए अंतिम उत्पादक तक पहुंचा जाए। हमने इस नजरिये के बारे में तब जाना जब यूरोपियन यूनियन ने 2010 में कैच सर्टिफिकेट प्रणाली प्रारंभ की। अमेरिकी सरकार ने पहचान की इस नियमन प्रणाली को एसआईएमपी के तहत आने वाले फार्मिंग उत्पादों तक भी विस्तारित कर दिया है।

हमारे किसानों और उत्पादकों के लिए जरूरी हो गया है कि स्वयं को बाजार की बदलती परिस्थिति के मुताबिक ढालें। जैसा कि हमारे पास पहले से ही कैच सर्टिफिकेशन प्रणाली है, इसलिए एसआईएमपी के अंतर्गत आने वाले उत्पादों के मामले में निगरानी का अनुपालन हमारे लिए अधिक बड़ी चुनौती नहीं है। इसके अतिरिक्त हमारे निर्यातक अमेरिका के अपने सहयोगियों को जनवरी, 2018 से ही श्रिम्प के अलावा अन्य संबंधित उत्पादों के आंकड़े भी उपलब्ध कराते आ रहे हैं। हालांकि 1 जनवरी, 2019 से, जब से श्रिम्प को एसआईएमपी के तहत शामिल किया गया है, हमें अमेरिकी मानदंडों के अनुकूल फार्मिंग स्तर तक निगरानी प्रणाली सुनिश्चित करनी होगी।

इसे साकार रूप देने के लिए यह जरूरी है कि कॉमन डाटा बेस के जरिए प्रत्येक फार्म की पहचान हो ताकि आयातक के साथ-साथ अमेरिकी प्रशासन भी खरीद के स्रोत का आसानी से पता लगा सके और इसकी पुष्टि कर सके। एमपीडीए 2016 से ही किसानों का पंजीकरण कर रही है। अभी तक इस कार्यक्रम के तहत 64,000 किसानों का पंजीकरण हो चुका है। बावजूद इसके, संपूर्ण निगरानी के हमारे प्रयास पूरी तरह तभी सुनिश्चत हो सकेंगे, जब देश के समस्त फार्मों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण हो जाएगा। यह स्थिति हमें किसी भी देश के किसी भी खरीदार के सामने अपने निगरानी तंत्र को दृढ़ता के साथ पेश करने में मददगार सिद्ध होगी।

धन्यवाद

विश्व महासागर दिवस पर समुद्री तटों में स्वच्छता अभियान

सेंट अल्बर्ट कॉलेज एर्नाकुलम के 'नेटफिश' सी क्लब ने इस साल विश्व महासागर दिवस के मौके पर कोच्चि के वैपिन और फोर्ट कोच्चि समुद्री तटों पर स्वच्छता और जागरूकता अभियान चलाया।

कॉलेज के अनुसंधान संरक्षण समूह ने भी इस कार्यक्रम में सहयोग किया। 26 जून को कॉलेज में संपन्न संबंधित कार्यक्रम का उद्घाटन 'सीआईएफएनईटी' के निदेशक श्री ए.के. चौधरी ने किया और अध्यक्षता उप प्रधानाचार्य रेव फा जॉन क्रिस्टोफर वडशेरी ने की। इस मौके पर प्रधानाचार्य डॉ. एम.एल. जोसेफ, नेटफिश के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. जोइस वी. थॉमस, राज्य समन्वयक श्री एन.के. संतोष, मात्स्यिकी एवं जलकृषि अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अजिथ थॉमस जॉन और डॉ. वी.एम. विजॉय ने संबोधित किया।

उद्घाटन समारोह के पश्चात सी-क्लब और स्टाफ के सदस्यों ने समुद्री तट सफाई की तैयारी की। सी-क्लब के चार प्राध्यापकों के नेतृत्व में 40 विद्यार्थियों के दल ने दोपहर से पूर्व वैपिन बीच और दोपहर के बाद फोर्ट कोच्चि बीच की सफाई की।

नेटफिश के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और राज्य समन्वयक ने भी सफाई कार्य में सक्रिय भागीदारी निभाई। प्लास्टिक और कांच की बोतलें, पेय पदार्थों के खाली डिब्बे, चप्पलें, फॉम की कतरनें, जाल के टुकड़े और पालिथीन की थैलियां इत्यादि अपशिष्ट सामग्री को करीब 30 बैगों में भरकर कोच्चि नगर निगम के कूड़ेदानों के हवाले किया गया। इस स्वच्छता अभियान में शामिल लोगों को दस्ताने, मॉस्क और टोपियां उपलब्ध कराई गईं थीं।

Freight Brokers Global Services

The world within reach.

C-TPAT Customs-Trade Partnership Against Terrorism
BUILDING PARTNERSHIPS • PROTECTING FREEDOM

Looking to Export to the U.S.?

HOW CAN FBGS HELP YOU?

Let our dedicated team with decades of experience assist you

National Customs Brokerage

Domestic and International Air Freight

FCL/LCL Ocean Freight

Full Service, Inter-Modal & LTL Trucking

Cold/Dry/Bonded Warehouse & Distribution

Full Service FDA Security & Compliance Consulting

First Time Importer Assistance

- Bond and Licensing Assistance
- FDA/USDA/Fish & Wildlife - OGA Compliance
- ADD/CVD Monitoring & Refunds
- "Green Ticket Applications" & Monitoring
- National Cold Storage Network
- Reduced Duty Rates

LET'S GET STARTED!

Call: +91 98478 02324

Email: ExportUSA@FreightBrokersGlobal.com

फोर्ट कोच्चि बीच की सफाई करते विद्यार्थी

वैपिन बीच को साफ करते सी-क्लब के सदस्य

कार्यक्रम का उद्घाटन करते सीआईएफएनईटी के निदेशक ए.के. चौधरी

Advertisement Tariff in MPEDA Newsletter
Rate Per Insertion

Back Cover	(Colour)	Rs. 15,000/-	US$ 250/-
Inside Cover	"	Rs. 10,000/-	US$ 200/-
Inside Full Page	"	Rs. 8,000/-	US$ 150/-
Inside Half Page	"	Rs. 4,000/-	US$ 75/-

* GST @ 18% is extra

Ten Percent concession for contract advertisement
for one year (12 issues) or more.
Matter for advertisement should be provided by the advertiser in JPEG or PDF format in CMYK mode.

Mechanical Data : Size : 27 x 20 cms.
Printing : Offset (Multi-colour)
Print Area : Full Page : 23 x 17.5 cm, Half Page : 11.5 x 17.5 cm

For details contact:
Deputy Director (MP) MPEDA House, Panampilly Avenue, Cochin - 682036 Tel: +91 484 2321722, 2311979
Fax: +91 484 2312812, E-mail : newslet@mpeda.gov.in

'विश्व पर्यावरण दिवस' और 'विश्व महासागर दिवस' मनाया गया

नेटफिश (NETFISH) ने 5 जून को तटीय पुलिस स्टेशन नींडकरा, शुचित्व मिशन कोल्लम, कोल्लम निगम और फोर्ट चर्च कोल्लम के सहयोग से तंगशेरी फिशरीज हार्बर में स्वच्छता अभियान चलाकर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इस क्रम में प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए जागरूकता कक्षा भी लगाई गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों सहित एस.एन. कॉलेज कोल्लम, टीकेएम कॉलेज कोल्लम और पक्कुलम एचएसएस के

विश्व पर्यावरण दिवस पर संबोधित करती नेटफिश की राज्य समन्वयिका श्रीमती एन.आर. संगीता

300 से अधिक लोगों ने इस कार्यक्रम में भागीदारी निभाई। हार्बर स्वच्छता अभियान का श्रीगणेश कोल्लम जिला पंचायत के उपाध्यक्ष श्री एस. वेणुगोपाल ने किया। इस मुहिम के दौरान एकत्र किए गए प्लास्टिक कचरे को नष्ट करने के लिए शुचित्व सागरम् परियोजना को सौंप दिया गया। स्वच्छता कार्यक्रम के तहत आयोजित जागरूकता कक्षा का उद्घाटन कोल्लम के पुलिस अधीक्षक डॉ. अरुल बी. कृष्णा ने किया। नेटफिश की राज्य समन्वयिका श्रीमती एन.आर. संगीता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

महासागर की महत्ता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विश्वभर में 8 जून को विश्व महासागर दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर नेटफिश, नींडकरा तटीय पुलिस और आलप्पाड ग्राम पंचायत ने मिलकर अजीकल्ल फिशिंग हार्बर में स्वच्छता कार्यक्रम चलाया। एनएसएस स्वयंसेवक, मत्स्य कर्मी और अन्य तटवर्ती लोगों ने इस स्वच्छता मिशन में बढ़चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम के माध्यम से इस आशय की जागरूकता जगाने में भी मदद मिली कि समुद्र और इसके तटवर्ती क्षेत्र को प्लास्टिक के कचरे से बचाने की परम आवश्यकता है। इस अभियान के दौरान एकत्र किए गए अपशिष्ट को नींडकरा स्थित प्लास्टिक विखंडन इकाई में भेज दिया गया।

स्वच्छता अभियान की शुरुआत अज़ीक्यल से होकर हार्बर तक निकाली गई एक रैली से हुई। आलप्पाड पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती पी. सेलीना ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

गुजरात स्थित मंगरौल फिशिंग हार्बर में विश्व महासागर दिवस के मौके पर 8 जून को हितधारकों की परामर्शी बैठक हुई। विषय था- मूविंग टुवड्र्स सस्टेनेबल फिशिंग यानी चिरस्थाई मत्स्यन की ओर प्रयाण। कार्यक्रम में मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों, एमपीईडीए, सीआईएफटी, सीएमएफआरआई, कॉलेज ऑफ फिशरीज् और विभिन्न नौका संगठनों के अध्यक्ष व सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर नेटफिश के राज्य समन्वयक श्री जिग्नेश विसावड़िया ने विश्व महासागर दिवस की अहमियत समझाई। कार्यक्रम का उद्घाटन एमपीईडीए प्राधिकरण के सदस्य श्री वेल्जीभाई के. मसानी ने किया। कॉलेज ऑफ फिशरीज में सहायक प्रोफेसर श्री जितेश सोलंकी ने समुद्री मत्स्य पकड़ और चिरस्थाई मत्स्यन पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। सीआईएफटी के वैज्ञानिक डॉ. के.के. प्रजीत ने विस्तार

गुजरात में हितधारकों की परामर्शी बैठक का उद्घाटन करते एमपीईडीए के प्राधिकार सदस्य वेल्जीभाई के. मसानी

से बताया कि मछली पकड़ने के लिए किस तरह के चौकोर जाल का इस्तेमाल किया जाए कि छोटी-छोटी मछलियों का सरंक्षण हो सके। उन्होंने मछुआरों से आग्रह किया कि वे अवयस्क मछलियों को पकड़ने से बचें और सतत व स्थिर मत्स्य पकड़ को व्यवहार में लाएं।

बैठक में मौजूद हितधारकों ने चिरस्थाई मत्स्यन और छोटी-छोटी मछलियों के संभावित संरक्षण पर अपने-अपने विचार प्रकट किए। सभी प्रतिभागियों ने शपथ ली कि वे अवयस्क मछलियों को नहीं पकड़ेंगे और इस प्रकार समुद्री संसाधनों के सरंक्षण की दिशा में काम करेंगे। वे बड़े-बड़े जालों की बजाय 40 एमएम के चौकोर जाल के इस्तेमाल की आचार संहिता का पालन करेंगे और प्लास्टिक कचरे को समुद्र में नहीं फेकेंगे। बी.ए. यादव शिक्षा व ग्रामीण विकास न्यास के अध्यक्ष श्री कांजीभाई जाधव ने इन कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए नेटफिश को हरसंभव सहयोग देने की पेशकश की।

कौशल विकास और स्क्वेयर मेष कॉड-एंड की बुनाई

उद्घाटन भाषण देते एमपीईडीए के निदेशक (विपणन) टी. डोला शंकर

मछली पकड़ने के विशालकाय जालों में एक, चौकोर कॉड-एंड जाल स्क्विड्स और कटलफिश इत्यादि अनेक अवयस्क मछलियों को अलग करता है। इस प्रकार यह मत्स्यन के स्थिर व सतत विकास में सहायक होता है। पारिस्थितिकीय लाभ के अलावा यह आर्थिक रूप से भी फायदेमंद है क्योंकि इसमें हीरक आकार वाले जाल के मुकाबले ईंधन की खपत कम होती है। हालांकि मात्स्यिकी क्षेत्र में अभी तक चौकोर बुनाई वाले जाल की पद्धति को प्रभावशाली ढंग से लागू नहीं किया जा सका है।

कारवार में चौकोर जाल का प्रदर्शन

मछली पकड़ने के लिए चौकोर जाल के इस्तेमाल को लोकप्रिय बनाने सिलसिले में नेटफिश ने केरल के मुनम्बम और कर्नाटक के कारवार में जून 2018 में स्क्वेयर मैश कॉड-एंड फेब्रीकेशन पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास परिषद (एनएफडीबी), हैदराबाद ने कोष उपलब्ध कराया। मुनम्बम में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम को आईसीएआर-सीआईएफटी, कोच्चि ने तकनीकी सहायता दी जबकि कारवार में आयोजित कार्यक्रम को फिशरीज कॉलेज मंगलौर के संसाधन से तकनीकी सहयोग मिला। प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 50 लाभार्थी शामिल हुए। इनमें अधिकतर जाल की मरम्मत करने वाले कारीगर थे। मुनम्बम में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 19 जून को एमपीईडीए के निदेशक (विपणन) श्री टी. डोला शंकर आईओएफएस ने किया। श्री के. शिवराजन उप निदेशक (एसएसपी) एमपीईडीए ने परिचयात्मक संबोधन किया। अन्य वक्ताओं में थे- श्री पी.एस. नोबी तकनीकी अधिकारी आईसीएआर-सीआईएफटी, श्री पी.जे. विनु अध्यक्ष ट्रॉल नेट वर्कर्स वेलफेयर एसोसिएशन मुनम्बम, डॉ. जॉयस वी. थॉमस सीईओ नेटफिश और राज्य समन्वयक एन.के. संतोष।

कारवर में 29 जून को सीएमएफआरआई के सभागार में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सीएमएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सैंथिल मुरुगन ने किया। वक्ताओं में शामिल थे- डॉ. एस. शशि, सहायक निदेशक एमपीईडीए, श्री वेंकटेश नाइक, सचिव एससीओडीडब्लुईएस, श्री दिलीप चन्द्रेकर, अध्यक्ष टॉल बोट यूनियन बैथकोल कारवार और श्री रियाज, कार्यक्रम प्रबंधक एससीओडीडब्लुईएस (सहयाद्री समुदाय विकास व महिला सशक्तीकरण सोसायटी)।

संकेंद्रित क्षेत्र

मुनम्बम में प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते एमपीईडीए के निदेशक (विपणन) टी. डोला शंकर

कारवार में प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते सीएमएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सैंथिल मुरुगन

मुनम्बम में हीरक जाल को चौकोर जाल में बदलते कारीगर

कारवार में गणमान्य व्यक्तियों के साथ प्रशिक्षणकर्ता

नेटफिश के राज्य समन्वयक श्री के.ए. नारायण ने मछुआरों को चौकोर जाल बुनाई प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में समझाया। उद्घाटन सत्र के बाद फिशरीज कॉलेज मंगलौर में मात्स्यिकी अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफेसर डॉ. हनुमनथप्पा जो कि कार्यक्रम के रिसोर्स पर्सन भी थे, ने चौकोर जाल के बारे में संक्षिप्त व्याख्यान दिया। उन्होंने जाल फेंकने वाली नौका के मालिकों से अपील की कि वे सुरक्षित व संरक्षित मात्स्यिकी के लिए सिर्फ 35 एमएम के चौकोर कॉड-एंड जाल का इस्तेमाल करें।

आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले बहुकोणीय जाल (हीरक जाल) को काटछांट और नए सिरे से जोड़ने की तकनीक अपनाकर चौकोर जाल में आसानी से बदला जा सकता है। इस तकनीक के तहत जाल संबंधी सामग्री लेकर चौकोर जाल कॉड-एंड को तैयार किया जा सकता है। प्रशिक्षणकर्ताओं के समक्ष रिसोर्स पर्सन ने इस तकनीक का प्रदर्शन भी किया। बाद में प्रशिक्षकों को बहुकोणीय जाल सामग्री, कैंची, सूई और रस्सी दी गई ताकि वे इस तकनीक का अभ्यास करें। प्रशिक्षणकर्ताओं द्वारा तैयार नमूनों का मूल्यांकन किया गया और आवश्यतानुसार उनमें सुधार भी किए गए।

प्रत्येक प्रशिक्षणकर्ता से उसकी प्रतिक्रिया प्राप्त की गई उन्हें प्रमाणपत्र भी जारी किए गए।

‘समुद्र में सुरक्षा’ पर जागरूकता अभियान

मुनम्बम में मछली पकड़ने वाले नौका चालकों को लाइफ जैकेट का वितरण।

समुद्र सुरक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जहां समुद्र में जाने वाले मछुआरे सबसे कम ध्यान देते हैं। कई मछली पकड़ने की नौकाओं में लाइफ जैकेट और लइफ फ्लोट जैसे बुनियादी जीवन रक्षक उपकरण नहीं होते हैं या अपर्याप्त रूप में रखे जाते हैं। समुद्र सुरक्षा और सुरक्षित नौ-परिवहन के बारे में मछुआरों में जागरूकता पैदा करने के लिए नेटफिश द्वारा जून, 2018 में जागरूकता अभियानों की एक श्रृंखला का आयोजन किया गया था।

नेटफिश के सीईओ डा. जॉइस वी थॉमस ने समुद्री सुरक्षा बारे में बताया।

पश्चिम बंगाल में, ‘समुद्री सुरक्षा एवं नौ-परिवहन’ पर तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम क्रमश: 6, 7 और 14 जून को दशमील, अक्षयनगर और देशप्रण बंदरगाह पर आयोजित किए गए थे। मशीनीकृत मछली पकड़ने की नौकाओं के कुल 110 स्किपर्स/ड्राइवरों को प्रशिक्षित किया गया।

फ्रेजरगंज के कोस्ट गार्ड स्टेशन कमांडेंट श्री अभिजीत दासगुप्ता ने दशमील में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया और भारतीय समुद्र जल में मत्स्यन, समुद्री मात्स्यिकी, जीवन रक्षक उपकरण आदि की कानूनी आवश्यकताओं का वर्णन किया।

देशप्रण में कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए देशप्रण के विशेष अधिकारी श्री पीके पहाड़ी ने मत्स्यन के दौरान बचाव एवं

सुरक्षा पर प्रकाश डाला। राज्य समन्वयक श्री अतनु रे ने समुद्र में सुरक्षा, मछली पकड़ने की नौकाओं के पंजीकरण और लाइसेंस के महत्व, विभिन्न जीवन रक्षक उपकरणों के उपयोग, विभिन्न संचार प्रणालियों, सड़क के नियमों, अलग-अलग दिन के संकेतों और सुरक्षित नौ-परिवहन के लिए रात में प्रकाश संकेतों आदि के बारे में विस्तार से बताया। सभी कप्तानों को मत्स्य शिकार के लिए सुरक्षित नौ-परिवहन के महत्व का अहसास हुआ।

नेटफिश के सीईओ डा. जॉइस वी थॉमस ने 13 जून को मुनम्बम में आयोजित कार्यक्रम में जीवन रक्षक उपकरण, नौ-परिवहन उपकरण और नौ-परिवहन सिग्नल के बारे में बताया। इसमें फिशिंग बोट ओनर्स एवं ऑपरेटर्स को ऑर्डिनेशन कमेटी, मुनम्बम के अध्यक्ष श्री पीपी गिरीश, मुनम्बम यन्त्रवल्कृत मत्स्यबंधन प्रवीण संघ के अध्यक्ष श्री सुधास थायत और फिशिंग बोट ऑपरेटर्स रिलीफ एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री पी.एक्स. स्टैनले भी शामिल हुए। मत्स्यन नौकाओं में जीवन रक्षक उपकरणों की आवश्यकता पर प्रशिक्षुओं को जागरूक किया गया और प्रोत्साहन के रूप में कार्यक्रम में मत्स्यन नौकाओं को 81 लाइफ जैकेट वितरित किए गए।

एमएसएसआरएफ के सहयोग से तमिलनाडु के पोम्बुहार में 29 जून को 30 मछुआरों और मछली श्रमिकों के लिए समुद्र सुरक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। मछुआरों को व्यक्तिगत सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। सुरक्षा उपकरणों का प्रदर्शन किया गया और आपातकालीन स्थिति को संभालने के बारे में सिखाया गया। प्रशिक्षुओं ने सुरक्षा उपकरणों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया और नेटफिश से रियायती दर पर जीवन रक्षक उपकरण लेने के लिए अनुरोध किया गया।

दशमील पर समुद्र सुरक्षा कार्यक्रम।

मछुआरों ने सीखा जीपीएस उपकरणों के इस्तेमाल का तरीका

नेटफिश ने अपने सदस्य एनजीओ डीएफवाईडब्ल्यूए के साथ मिलकर 14 जून को विशाखपट्टनम के पुडिमडक्क मत्स्य संग्रह केन्द्र में टूना मछली नौका मालिकों और चालक दल के सदस्यों के लिए 'जीपीएस (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) हैंडलिंग और समस्या निवारण प्रशिक्षण आयोजित किया।

नेटफिश के राज्य समन्वयक श्री पी. हनुमंथा राव ने प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्यन और मत्स्य स्थलों को चिह्नित करने में जीपीएस डिवाइस के उपयोग के बारे में बताया। डीएफवाईडब्ल्यूए के कार्यक्रम समन्वयक श्री बी. थावुडु ने ऐसी मोटरचालित मत्स्यन नौकाओं में हस्त जीपीएस के महत्व के बारे में बताया, जिन नौकाओं में बहुत सीमित मात्रा में ईंधन का उपयोग होता है।

मत्स्यन स्थलों को जीपीएस के साथ चिह्नित करने से मछुआरों को मछली तलाश के प्रयास कम करने में मदद मिलेगी, इससे वह ईंधन और समय बचा सकते हैं। इसके अलावा, पकड़ की ताजगी को बनाए रखा जा सकता है क्योंकि नौकाएं संग्रह केंद्र पर जल्दी पहुंच सकती हैं।

गार्मिंन कंपनी के श्री नागराजू ने प्रतिभागियों को मत्स्यन में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न नौ-परिवहन उपकरणों के बारे में बताया।

बैटरी से संचालित हस्त जीपीएस के उपलब्ध मॉडल से टूना मत्स्यन नौका मालिकों को परिचित कराया गया और

पुडिमडक्क में जीपीएस प्रशिक्षण

जीपीएस उपकरणों के संचालन का प्रदर्शन भी किया गया।

मछुआरों को खुद से उपकरणों को संचालित करने और मार्ग चिह्नित एवं मत्स्य स्थल के बारे में अपने संदेह को दूर करने का अवसर दिया गया। प्रशिक्षण से मछुआरों को मत्स्यन में जीपीएस डिवाइस की उपयोगिता को समझने में मदद मिली।

एक अन्य जीपीएस प्रशिक्षण तमिलनाडु के पोम्बुहार में गैर सरकारी संगठन एमएसएसआरएफ की मदद से 28 जून को आयोजित किया गया था। नाव चालक, नाव मजदूर, नाव मालिक और मछुआरों सहित कुल 30 प्रतिभागी, जो नए कौशल सीखने में रुचि रखते थे, ने कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षुओं को सुरक्षित नौ-परिवहन में जीपीएस के महत्व के बारे में सिखाया गया और उन्हें जीपीएस संभालना और इसकी समस्या निवारण तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें मछली खोज के समय, डीजल खपत और कार्बन उत्सर्जन स्तर को कम करके मत्स्यन की दक्षता में सुधार में जीपीएस के फायदों के बारे में भी अवगत कराया गया।

पोम्बुहार में जीपीएस प्रशिक्षण

जून 2018 के दौरान भारत के चुनिन्दा पत्तनों में समुद्री मत्स्य लैंडिंग की प्रमुख बातें

के.ए. नारायण, वी.वी. अफजल, एन.जे. नीतू और जॉयस वी. थॉमस
नेटफिश-एमपीईडीए

भारतीय समुद्री मत्स्य लैंडिंग ने सुधार दर्शाई, सालाना दर 2017 में बीते साल की तुलना में 5.6 फीसद अधिक है। सीएमएफआरआई की रिपोर्ट के मुताबिक साल 2017 में भारत में पकड़ कर लाई गई कुल समुद्री मछली 3.83 मिलियन टन थी। एमपीईडीए की मत्स्यन योजना की सुविधा के लिए नेटफिश भारत के प्रमुख बंदरगाहों पर समुद्र से पकड़ कर लाई गई मछली और उन्हें लाने वाली नावों की संख्या को रिकार्ड करता है। जून, 2018 में पकड़ी गईं समुद्री मछली और इन्हें पकड़ने वाली नावों की संख्या का विश्लेषण इस रिपोर्ट में पेश किया गया है।

देशभर के प्रमुख बंदरगाहों के डाटा संग्रह केंद्रों (देखें तालिका-1) पर समुद्री मछली पकड़ने और उन्हें लाने वाली नावों के आंकड़े दैनिक आधार पर एकत्रित किए। ये आंकड़े प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतों से एकत्रित किए जाते हैं। यह अनुमान बंदरगाह पर एक दिन में पकड़ कर लाई जाने वाली मछलियों को देख कर लगाया गया। बंदरगाह पर नाम, रजिस्ट्रेशन नंबर और मछली पकड़ने के जहाज व नौका के प्रकार का डाटा रिकार्ड किया गया। इस आंकड़े का ऑनलाइन एप्लीकेशन और एमएस ऑफिस (एक्स) टूलों की मदद से प्रजातिवार, क्षेत्रवार, राज्यवार और बंदरगाहवार विश्लेषण किया गया। इस रिपोर्ट में 30 बंदरगाहों से एकत्र खास अवधि के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

तालिका 1. आंकड़ा संग्रह केलिए चुने गए लैंडिंग केन्द्रों और बन्दरगाहों की सूची

क्रम संख्या	राज्य	मत्स्य बंदरगाह
1	केरल	बेपोर
2		पुथीयप्पा
3		थोपूमड्डी
4		मुनाबाम
5		थोथीपल्ली
6		कयाकुलम
7		विजिहिंजम
8	महाराष्ट्र	हरने
9	गुजरात	गुजरात
10		मालपे
11		गंगोली
12	पश्चिम बंगाल	दीघा (संकरपुर)
13		देशापरन
14		नामखाना
15		सुलतानपुर
16		काकद्वीप
17		राईदीगी
18	ओड़ीशा	पाराद्वीप
19		बलरामगढ़ी
20		बहाबलपुर
21		धमारा
22	तमिलनाडु	चेन्नई
23		पजहियार
24		नागापट्टीनम
25		तूतीकोरन
26		कूडलोर
27		मंडपम
28		पांडिचेरी
29		कराईकल
30		चिनामुट्टम

मत्स्य एक भीकरण का मूल्यांकत

समुद्री मछली पकड़ कर लाने वाले 30 स्थानों से जून, 2018 में कुल 11619.06 टन मछली के आंकड़े एकत्रित हुए। इसमें पेलाजिक फिन फिश 4439.45 टन (38%), गहरे समुद्र से पकड़ी जाने वाली मछली (Demersal fin fishes) 2889.96 टन (25%) और शेल फिश 4289.65 टन (37%) है। इनमें महासागरीय स्त्रोतों से पकड़ी गई मछलियों की संख्या सबसे अधिक है। (डायग्राम-1)

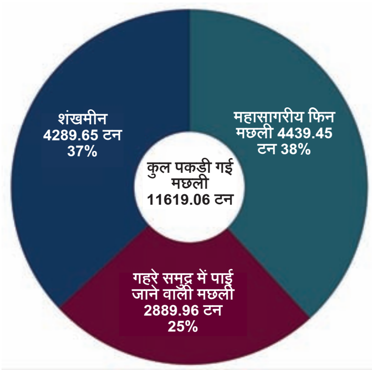

डायग्राम 1. जून 2018 में पकड़ कर लाई गई मछलियों का श्रेणीवार ब्योरा

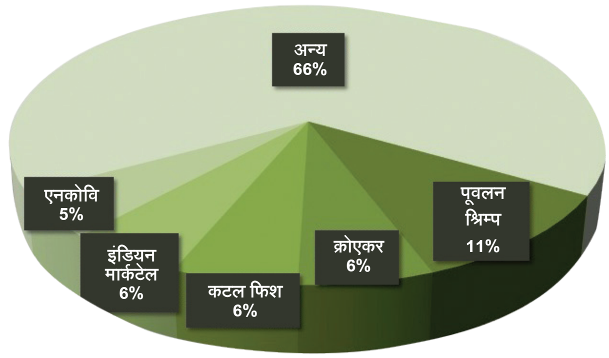

डायग्राम 2: जून 2018 में पकड़ कर लाए गए प्रमुख मत्स्य उत्पाद

समुद्री मत्स्य की कुल 94 प्रजातियों को पकड़ कर लाया गया। इनमें प्रचुरता के लिहाज से पांच प्रजातियों की भागीदारी अधिक है। ये हैं - पूवालन श्रिम्प, क्रोएकर, कटलफिश, इंडियन मार्केल और एनकोवी (डायग्राम-2) हैं। इन पांच मत्स्य प्रजातियों की पकड़ी गई मछलियों में हिस्सेदारी 34% है। अन्य प्रमुख मत्स्य सामग्री थी-समुद्री केकड़ा, बॉम्बे डक, स्क्विड और इंडियन ऑयस सैरडिन। इनमें से प्रत्येक की पकड़े गए मत्स्य उत्पादों में हिस्सेदारी 4% से अधिक है। इस महीने में सबसे कम पकड़ कर लाया गया मत्स्य उत्पाद रॉक लॉबस्टर था जो 0.08 टन था।

तालिका 2 में जून, 2018 में दर्ज कई मत्स्य उत्पादों की क्रमवार संख्यात्मक जानकारी दी गई है। महासागरीय मछलियों में एनकोविस, इंडियन मार्केल और बोम्बे डक मछलियां सबसे ज्यादा पकड़ कर लाई गईं। गहरे समुद्र से पकड़ी जाने वाली मछलियों में क्रोएकर, पोमफ्रेट और कैटफिश हैं। हालांकि शेल फिश में सबसे ज्यादा मोल्यूस्क्स, क्रसटेशियन और पेनेड श्रिम्प की हिस्सेदारी 55 फीसद से अधिक है।

तालिका 2. जून, 2018 में विभिन्न मत्स्य उत्पादों का श्रेणीवार ब्योरा

मत्स्य उत्पाद	टन	पकड़ी गई मछली का %
महासागरीय फिनफिश		
एनकोविज	760.11	6.54
इंडियन मैकेरल	638.97	5.50
बॉम्बे डक	517.61	4.45
इंडियन ऑयल सार्डिन	484.14	4.17
रिबन फिश	381.58	3.28
स्कैड	363.63	3.13
टूना	328.19	2.82
हिल्सा	226.57	1.95
ट्रिवली	105.34	0.91
सीर फिश	91.74	0.79
बाराकुडा	74.37	0.64
डॉल्फिन फिश	69.35	0.60
लेसर सारडिन	67.11	0.58
लैदर जैकेट	59.62	0.51
ओरियंटल बोनिटो	58.20	0.50
हेरिंग्स	47.46	0.41
सैल फिश	40.00	0.34
सिल्वर सिलागो	30.65	0.26
म्यूलेट	30.00	0.26
मार्लिन	19.90	0.17
हार्स मैकेरल	12.30	0.11
इंडियन सेलमन	12.28	0.11
क्वीन फिश	10.55	0.09
सी बैस	4.80	0.04
कोबिया	3.40	0.03
इंडियन थ्रेड फिश	1.60	0.01
कुल	**4439.45**	**38.21**
गहरे समुद्र की फिनफिश		
क्रोएकर	742.06	6.39
पोमफ्रेट्स	445.25	3.83
कैट फिश	394.63	3.40
जैपनीज थ्रेड फिन बीम	338.13	2.91
स्नैपर	262.27	2.26

लिजर्ड फिश	166.20	1.43
सोल फिश	163.83	1.41
पॉनी फिशेज	70.80	0.61
ईल	55.15	0.47
बुल्स आई	51.66	0.44
गोट फिश	47.97	0.41
रेज	41.27	0.36
रीफ कोड	33.49	0.29
मून फिश	22.29	0.19
एम्परर बीम	17.32	0.15
व्हीप फिन सिल्वर बिड्डी	11.65	0.10
इंडियन हैलीबट	8.49	0.07
पैरट फिश	7.86	0.07
लॉंग स्पाइन सी- बीम	6.10	0.05
स्पाइन फुट	1.40	0.01
फाइलफिश	1.10	0.01
टाइगर फिश	0.50	0.00
गिटार फिश	0.30	0.00
येलो फिन सी बीम	0.25	0.00
कुल	**2889.96**	**24.87**
शंखमीन		
पेनाइड श्रिम्प्स	2378.89	20.47
नॉन-पेनाइड श्रिम्प्स	9.20	0.08
सी क्रेब (केकड़ा)	525.99	4.53
मड क्रेब (केकड़ा)	2.86	0.02
लॉबस्टर	2.28	0.02
कटलफिश	676.67	5.82
ऑक्टोप्स	193.14	1.66
स्कविड	500.64	4.31
कुल	**4289.65**	**36.92**
कुल योग	**11619.06**	**100.00**

क्षेत्रवार ब्योरा

दक्षिण पश्चिम तट में केरल के तट के सहित सात बंदरगाहों से इस अवधि में मछली के आंकड़े मिले थे। इनके तहत कुल 4044.31 टन मछली पकड़ कर लाई गई। हालांकि उत्तर पश्चिम तट पर कुल 644.98 टन मछली पकड़ी गई जिसमें गुजरात के तीन बंदरगाह और महाराष्ट्र का एक बंदरगाह है (डायग्राम-3)। दक्षिण-पूर्व तट पर कुल 2180.38 टन मछली पकड़ कर लाई गई जिसमें तमिलनाडु के नौ बंदरगाह हैं। उत्तर पूर्वी तट के पश्चिम बंगाल के छह बंदरगाहों और ओड़ीशा के चार बंदरगाहों पर कुल 4749.40 टन मछली पकड़ कर लाई गई।

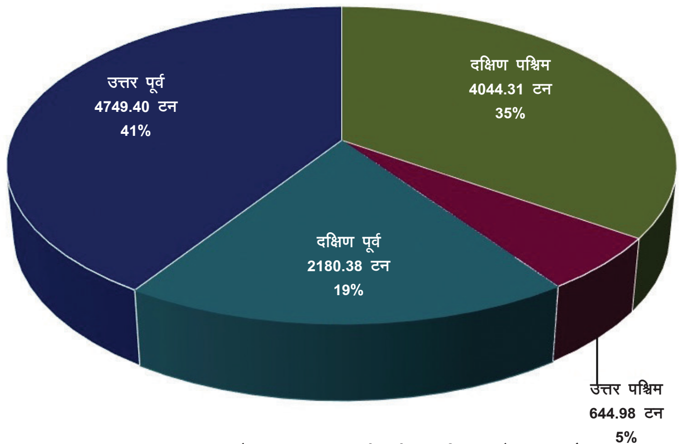

डायग्राम 3: जून, 2018 में पकड़ कर लाई गई मछली का क्षेत्रवार ब्योरा

तालिका तीन में हर क्षेत्र में पकड़ कर लाए गए पांच सबसे अधिक मत्स्य उत्पादों का उल्लेख है।

तालिका 3. जून, 2018 में हर क्षेत्र में उतारे गए प्रमुख उत्पाद

उत्पाद	टनों में	क्षेत्र में उतारी गई मछली का %
दक्षिण पश्चिम		
पूवलान श्रिम्प	1175.56	29.07
एनकोवी	444.48	10.99
इंडियन मैकेरल	358.35	8.86
इंडियन ऑयल सारडिन	228.40	5.65
लैयंग स्कैड	223.10	5.52
उत्तर पश्चिम		
रिबन फिश	127.35	19.74
इंडियन मैकेरल	121.60	18.85
कैट फिश	99.90	15.49
क्रोएकर	61.70	9.57
स्कविड	35.50	5.50
दक्षिण पूर्व		
कटल फिश	433.44	19.88
स्क्विड	191.85	8.80

इंडियन ऑयल सारडिन	117.45	5.39
इंडियन मैकेरल	111.17	5.10
इंडियन स्कैड	98.08	4.50
उत्तर पूर्व		
बॉम्बे डक	505.75	10.65
क्रोएकर	402.10	8.47
सी क्रैब	285.90	6.02
क्रोएकर	247.63	5.21
हिल्सा	217.97	4.59

राज्यवार ब्योरा

जून, 2018 में समुद्र से पकड़ कर सबसे अधिक मत्स्य उत्पाद केरल में लाए गए। केरल में 4044.31 टन मत्स्य उत्पाद लाए गए। पकड़ कर लाए गए कुल उत्पादों में इनकी हिस्सेदारी 35 फीसद थी (आकृति-4)। इसके बाद सबसे अधिक मत्स्य उत्पाद पश्चिम बंगाल में 3548.55 टन (31%) दर्ज किए गए। कर्नाटक और गोवा में मछली पकड़ने पर 1 जून से लागू प्रतिबंध के कारण कोई आंकड़े नहीं मिल पाए। इसी तरह आंध्र प्रदेश में मछली पकड़ने पर प्रतिबंध और उसके बाद मछुआरों के हड़ताल पर जाने के कारण मत्स्य उत्पाद पकड़ कर नहीं लाए जा सके थे।

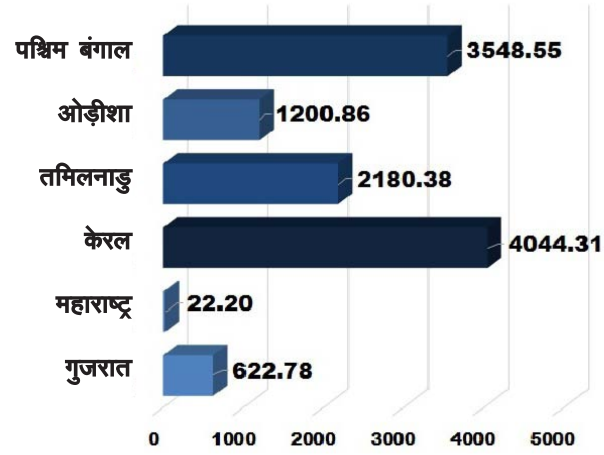

आकृति 4. जून, 2018 में पकड़ कर लाई गई मछली का राज्यबार ब्योरा (टन में)

तालिका 4 में जून के दौरान हर राज्य में पांच प्रमुख मत्स्य उत्पादों का वर्णन दिया गया है।

तालिका 4. विभिन्त राज्यों में जून 2018 में एकलित प्रमुख उत्पाद

उत्पाद	टनों में	राज्य में लाई गई मछली का %
केरल		
पोवलन श्रिम्प	1175.56	29.07
एनकोवी	444.48	10.99
इंडियन मैकेरल	358.35	8.86
इंडियन ऑयल सैरडिन	228.40	5.65
लैयंग स्कैड	223.10	5.52
महाराष्ट्र		
स्क्विड	5.60	25.23
कारीकाडी श्रिम्प	2.50	11.26
स्कैड	2.20	9.91
व्हाइट सैरडिन	2.00	9.01
पिंक श्रिम्प	1.80	8.11
गुजरात		
रिबन फिश	127.35	20.45
इंडियन मैकेरल	121.60	19.53
कैट फिश	99.90	16.04
क्रोएकर	61.70	9.91
स्क्विड	35.50	5.70
तमिलनाडु		
कटलफिश	433.44	19.88

स्क्विड	191.85	8.80
इंडियन ऑयल सैरडिन	117.45	5.39
इंडियन मैकेरल	111.17	5.10
इंडियन स्कैड	98.08	4.50
ओड़ीशा		
क्रोएकर	247.63	20.62
कैट फिश	124.13	10.34
कारीकाडी श्रिम्प	122.78	10.22
सी क्रैब	113.35	9.44
ब्राउन श्रिम्प	77.46	6.45
पश्चिम बंगाल		
बॉम्बे डक	505.75	14.25
क्रोएकर	402.10	11.33
सी क्रैब	285.90	8.06
हिल्सा	217.97	6.14
सिल्वर पोमफ्रेट	184.42	5.20

मत्स्य लैंडिंग बंदरगाहवार ब्योरा

तालिका 5 और 6 में भारत के पश्चिमी और पूर्वी तट के बंदरगाहों में इस माह के दौरान पकड़ कर लाई गई मछलियों के आंकड़े दर्शाए गए हैं। इन 30 बंदरगाहों में सबसे अधिक मछली 1909.00 टन (16%) कयाकुलम बंदरगाह पर पकड़ कर लाई गई। इसके बाद बंदरगाह देशप्रण में 1726.53 टन (15%) मत्स्य उत्पाद लाए गए। सबसे कम मत्स्य उत्पाद तूतीकोरिन बंदरगाह में लाए गए। तूतीकोरिन में 17.85 टन मत्स्य उत्पाद लाए गए।

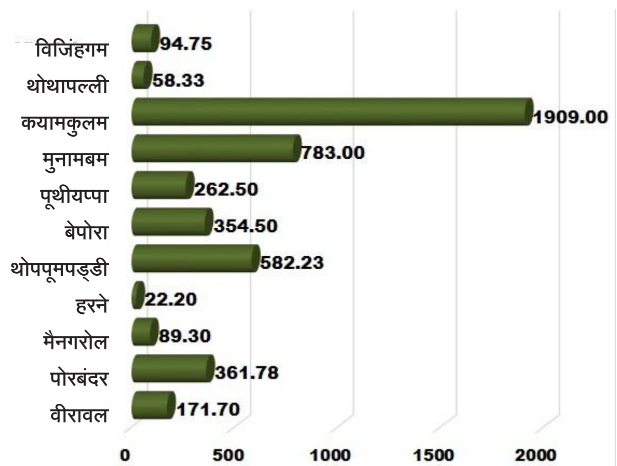

आकृति 5 : पश्चिमी तट के साथ प्रमुख बंदरगाहों पर जून, 2018 मत्स्य लैंडिंग

नौकाओं का आवगमन

जून, 2018 में कुल 6564 नौकाओं का आवगमन दर्ज किया गया। इसमें सबसे ज्यादा नौकाओं का आवगमन देशप्रण बंदरगाह (561 बार) में हुआ। इसके बाद दूसरे नंबर पर सबसे ज्यादा नौकाओं का आगमन पोरबंदर बंदरगाह पर

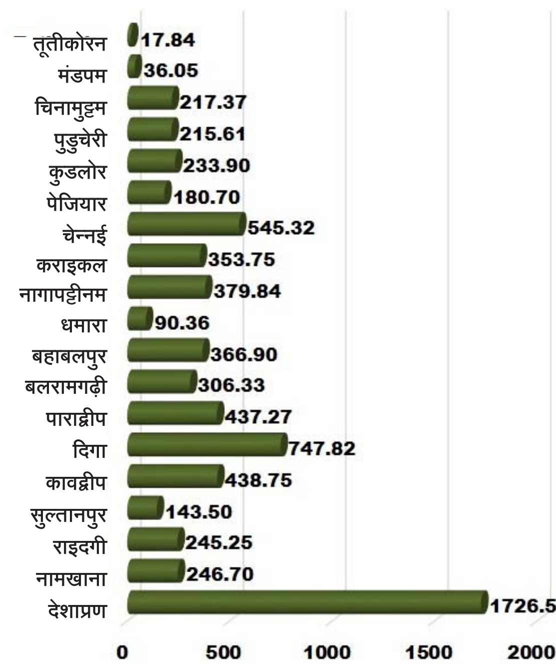

आकृति 6 : पूर्वी तट के साथ-साथ प्रमुख बंदरगाहों पर जून, 2018 मत्स्य लैंडिंग

503 बार हुआ। बंदरगाह पर मछली पकड़ कर लाने वाली नौकाओं में 70 फीसद मत्स्य नौकाएं ट्रालर श्रेणी की थीं और बाकी पर्स सीनर्स, गिल नेटर्स, लांग लाइनर्स और पारंपरिक नौकाएं थीं।

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 5 में जून, 2018 और उससे पिछले महीने के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इस महीने के दौरान मछली पकड़ने में गिरावट दर्ज की गई। इसका कारण यह है कि इस अवधि के दौरान पूर्वी और पश्चिमी तट पर मछली पकड़ने पर रोक लगी हुई थी। जून में पकड़े गए मत्स्य उत्पादों के विश्लेषण से यह पता चला कि शंखमीन की हिस्सेदारी मूलत: 37 फीसद बढ़ी और इसकी हिस्सेदारी महासमुद्रीय मछली की श्रेणी के बाद दूसरे नंबर पर आ गई। हालांकि महासागरीय फिनफिश की हिस्सेदारी सबसे अधिक रही और प्रतिशत में इसकी हिस्सेदारी थोड़ी सी गिरी। हालांकि बीते महीने की तुलना में गहरे समुद्र में पाई जाने वाली मछली की हिस्सेदारी 10 फीसद कम हुई। जून में चुनिंदा बंदरगाहों पर लाए गए मत्स्य उत्पादों में पूवलन श्रिम्प की हिस्सेदारी सबसे अधिक रही। इस महीने में सबसे ज्यादा मत्स्य उत्पाद पकड़ कर केरल में लाए गए जबकि कर्नाटक में मछली पर लगी रोक के कारण कोई भी मत्स्य उत्पादन इसके बंदरगाह पर नहीं लाए जा सके। सबसे ज्यादा मत्स्य उत्पाद केवलम बंदरगाह पर पकड़ कर लाए गए। बीते माह की तुलना में जून में मछली पकड़ने वाली नौकाओं का कम आवगमन हुआ।

सारांश

जून, 2018 में भारत के 30 प्रमुख मत्स्य बंदरगाहों पर कुल 11619.06 टन मत्स्य उत्पाद पकड़ कर लाए गए थे। इसमें गहरे समुद्र में पाए जाने वाली मछली की अपेक्षा महासागरीय मछली और शंखमीन की हिस्सेदारी अधिक रही। मत्स्य उत्पादों में सबसे अधिक पूवलन श्रिम्प की हिस्सेदारी रही। पकड़े गए मत्स्य उत्पादों में से 60 फीसद पूर्वी तट से लाए गए। केरल के पश्चिमी तट पर सबसे अधिक मत्स्य उत्पाद पकड़े गए और राज्य के कयाकुलम बंदरगाह पर सबसे ज्यादा मत्स्य उत्पाद पकड़ कर लाए गए। पश्चिम बंगाल के देशप्रण बंदरगाह पर मछली पकड़ने वाली नौकाओं का सबसे अधिक आवागमन हुआ।

तालिका 5. आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण

	अप्रैल 2018	मई 2018	जून 2018
कुल पकड़े गए मत्स्य उत्पाद	52,184.40 टन	32,153.82 टन	11619.06 टन
पकड़ी गई महासागरीय फिनफिश	20,374.36 टन (39%)	13,330.59 टन (41%)	4439.45 टन (38%)
पकड़ी गई गहरे समुद्री की फिनफिश	17,128.26 टन (33%)	11,185.97 टन (35%)	2889.96 टन (25%)
पकड़ी गई शेल फिश	14,681.78 टन (28%)	7,637.26 टन (24%)	4289.65 टन (37%)
सबसे ज्यादा पकड़ी गई प्रजाति	स्कविड (10%)	जैपनीज थ्रेड फिन बीम (17%)	पूवलन श्रिम्प (11%)
पकड़ कर लाई मछलियों में अव्वल राज्य	केरल (30%)	कर्नाटक (35%)	केरल (35%)
पकड़ कर लाई गई मछलियों में अव्वल बंदरगाह	बेपोर (21%)	मंगलौर (18%)	कयाकुलम (16%)
नावों की कुल आवक	21,677	15,538	6,564

कुल पकड़ प्रतिशत

भारत के चुनिंदा बंदरगाहो पर जुलाई 2018 में उतरी मत्स्य खेप की खास बातें

संतोष एन. के., वी.वी. अफजल, एन.जे. नीतू और जॉयस वी. थॉमस,
नेटफिश-एमपीईडीए

एमपीईडीए की मत्स्यन योजना की सुविधा के लिए नेटफिश भारत के प्रमुख बंदरगाहों पर समुद्र से पकड़ कर लाई गई मछली और उन्हें लाने वाली नावों की संख्या को रिकार्ड करती है। जुलाई, 2018 में पकड़ी गई समुद्री मछली और इन्हें पकड़ने वाली नावों की संख्या का विश्लेषण इस रिपोर्ट में पेश किया गया है।

डाटा संग्रह और विश्लेषण

देशभर के प्रमुख बंदरगाहों के डाटा संग्रह केंद्रों (देखें तालिका1) पर समुद्री मछली पकड़ने और उन्हें लाने वाली नावों के आंकड़े दैनिक आधार पर एकत्रित किए गए। ये आंकड़े प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतों से एकत्रित किए जाते हैं। यह अनुमान बंदरगाह पर एक दिन में पकड़ कर लाई जाने वाली मछलियों को देख कर व्यक्तिगत रूप से लगाया गया है। बंदरगाह पर नाम, रजिस्ट्रेशन नंबर और मछली पकड़ने के जहाज व नौका के प्रकार का डाटा रिकार्ड किया गया। इस आंकड़े का ऑनलाइन एप्लीकेशन और एमएस ऑफिस टूलों की मदद से प्रजातिवार, क्षेत्रवार, राज्यवार और बंदरगाहवार विश्लेषण किया गया। इस रिपोर्ट में पांच समुद्री राज्यों के 26 बंदरगाहों के इस माह में एकत्रित आंकड़े हैं और इसका विश्लेषण किया गया है।

तालिका 1. बंदरगाहों की सूची और आंकड़ा संग्रह के लिए चुनिंदा मत्स्य केंद्र

तालिका	राज्य	मछली बंदरगाह
1	पश्चिम बंगाल	देशापरन
2		नामखाना
3		रायधीगी
4		सुलतान्पुर
5		कावद्वीप
6		दीघा
7	ओड़ीशा	पाराद्वीप
8		बलरामगढ़ी
9		बहाबलपुर
10		धमारा
11	आंध्र प्रदेश	विशाखापट्टनम
12		निझापट्टनम
13		काकीनाड़ा
14		मछलीपट्टनम
15	तमिलनाडु	नागीपट्टनम
16		कराइकल
17		चेन्नई
18		पेझियार
19		कुडालोर
20		पांडिचेरी
21		चिनामुट्ट्म
22		मंडपम
23	केरल	तूतीकोरन
24		थोपूमपडी
25		कयाकलम
26		विजिहिंजम

मत्स्य एकत्रीकरण का मूल्यांकन

समुद्री मछली पकड़ कर लाने वाले 26 स्थानों से जुलाई, 2018 में कुल 23957.27 टन मछली के आंकड़े एकत्रित हुए। इसमें पेलाजिक फिन फिश 11037.42 टन (46%), डेमेरसल फिन फिश 4685.39 टन (20%), और शेल फिश 8234.46 टन (34%) है। इनमें महासागरीय स्त्रोतों से पकड़ी गई मछलियों की संख्या सबसे अधिक है। (डायग्राम-1)

समुद्री मत्स्य की कुल 96 प्रजातियों को पकड़ कर लाया गया। प्रतुत्ता की दृष्टि से पांच प्रजातियों की भागीदारी इनमें सबसे अधिक है। ये क्रमश: इस प्रकार हैं इंडियन मार्केल, क्रोएकर, कटलफिश, स्कविड और हिल्सा (डायग्राम-2) हैं। इन पांच मत्स्य प्रजातियों की पकड़ी गई मछलियों में हिस्सेदारी 32% है। अन्य प्रमुख मत्स्य सामग्री समुद्री केकड़ा और बॉम्बे डक थे। इनमें से हरेक की आवक 1000 टन से अधिक थी। इस महीने में सबसे कम पकड़ कर

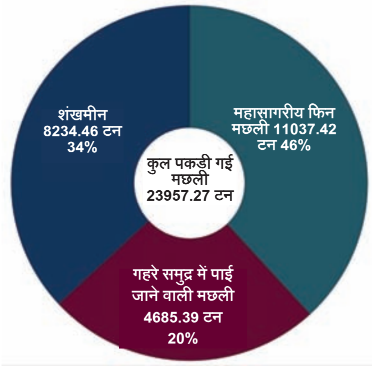

डायग्राम 1. जुलाई 2018 में पकड़ कर लाई गई मछलियों का श्रेणीवार ब्योरा।

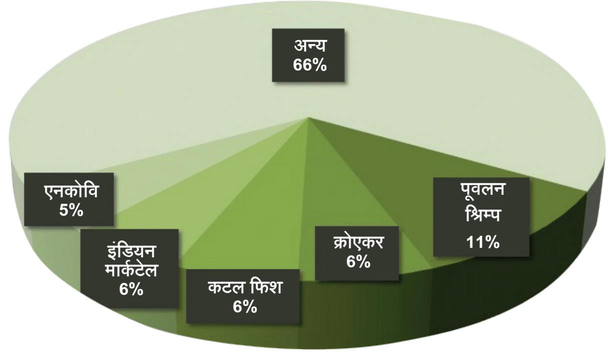

डायग्राम 2 : जुलाई 2018 में पकड़ कर लाए गए प्रमुख मत्स्य उत्पाद

लाया गया मत्स्य उत्पाद पिग्मी डेविल रे था जो 0.10 टन था।

तालिका 2 में जुलाई, 2018 में दर्ज कई मत्स्य उत्पादों की क्रमवार संख्यात्मक जानकारी दी गई है। महासागरीय मछलियों में इंडियन मार्केल, एनकोविस और हिल्सा सबसे ज्यादा पकड़ कर लाई गईं। हालांकि गहरे समुद्र से पकड़ी जाने वाली मछलियों में क्रोएकर और पोमफ्रेट थी। हालांकि शेल फिश में सबसे ज्यादा मोल्यूस्क्स, क्रस्टेशियन और पेनेड श्रिम्प्स की हिस्सेदारी 55 फीसद के करीब रही थी। इसमें कट्टलफिश, स्क्विड और समुद्री केकड़े का भी बहुत अधिक योगदान रहा।

तालिका 2. जुलाई 2018 में विभिन्न मत्स्य उत्पादों का श्रेणीवार ब्योरा

No.	मत्स्य उत्पाद	टन	पकड़ी गई मछली का %
महासागरीय फिनफिश			
1	इंडियन मार्कटेल	2443.25	10.20
2	एनकोविज	1306.57	5.45
3	हिल्सा	1153.70	4.82
4	बॉम्बे डक	1036.07	4.32
5	टूना	977.96	4.08
6	इंडियन ऑयल सेरडिन	898.29	3.75
7	रिबन फिश	855.73	3.57
8	स्कैड	755.96	3.16
9	सीर फिश	330.77	1.38
10	लैसर सेरडिन्स	291.51	1.22
11	तारदूर	267.58	1.12
12	बराकूडा	199.51	0.83
13	ट्रिवैलीज	100.37	0.42
14	क्वीन फिश	90.01	0.38
15	मयूलेट	73.67	0.31
16	सिल्वर सिलागो	57.68	0.24
17	लैदर जैकेट	47.34	0.20
18	इंडियन सेलमन	41.95	0.18
19	हार्स मार्कटेल	37.76	0.16
20	सी बॉस	23.52	0.10
21	मार्लिन	18.71	0.08
22	वुल्फ हेरिंग	18.08	0.08
23	ब्लैक किंग फिश	6.03	0.03
24	डॉल्फिन फिश	4.58	0.02
25	सैल फिश	0.50	0.00
26	इंडियन थ्रेड फिश	0.35	0.00
	कुल	**11037.42**	**46.07**
गहरे समुद्र में पाए जाने वाली फिन फिश			
27	क्रोएकर	1687.52	7.04
28	पोम्फ्रेट्स	1106.65	4.62
29	कैट फिश	471.63	1.97
30	सोल फिश	301.40	1.26
31	जैपनीज थ्रेड फिन बीम	229.25	0.96
32	ईल	160.53	0.67
33	लिजर्ड फिश	156.10	0.65
34	पॉनी फिश	152.10	0.63
35	स्नैपर	118.65	0.50
36	रैज	74.62	0.31

37	गोट फिश	66.01	0.28
38	पैरट फिश	38.44	0.16
39	रीफ कोड	23.28	0.10
40	व्हीप फिन सिल्वर बिड्डी	21.70	0.09
41	स्पाइन फुट	19.80	0.08
42	इंडियन हलीबट	18.81	0.08
43	एम्परर बीम	14.94	0.06
44	मून फिश	10.88	0.05
45	बुल्स आई	9.15	0.04
46	गिटार फिश	1.70	0.01
47	योलो फिन सी बीम	1.65	0.01
48	फाइलफिश	0.40	0.00
49	घोल	0.20	0.00
	कुल	**4685.39**	**19.56**
शेल फिश			
क्रस्टेशियन			
51	पेनाइड श्रिम्प्स	4490.34	18.74
52	सी क्रैब	1115.36	4.66
53	लाबस्टर	3.78	0.02
54	मड क्रैब	2.06	0.01
55	नॉन-पेनैइड श्रिम्प्स	0.30	0.00
56	कुल क्रसटेशियन	5611.85	23.42
मोलस्क			
57	स्क्विड	1224.07	5.11
58	कटलफिश	1290.90	5.39
59	ऑक्टोपस	107.64	0.45
60	**कुल मोलस्क**	**2622.61**	**10.95**
	कुल शेल फिश	**8234.46**	**34.37**
	कुल योग	**23957.27**	**100.00**

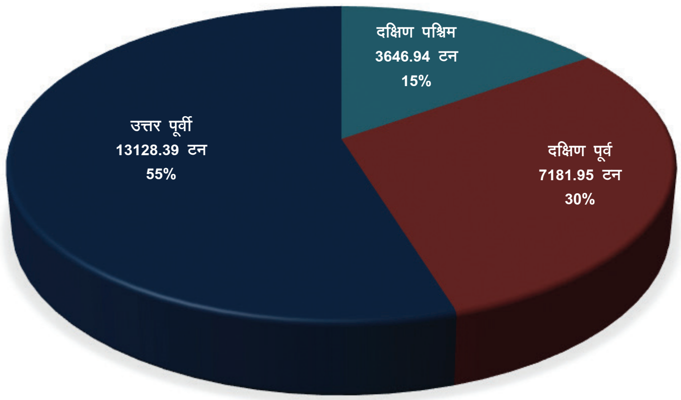

आकृति 3. जुलाई, 2018 में पकड़ कर लाई गई मछली का क्षेत्रवार ब्योरा

क्षेत्रवार ब्योरा

दक्षिण पश्चिम तट में केरल के तीन बंदरगाहों से ही इस अवधि में मछली की लैंडिंग के आंकड़े मिले। इसके तहत 3646.94 टन मछली की लैंडिंग हुई थी थी। हालांकि उत्तर पूर्व तट के तहत पश्चिम बंगाल के छह बंदरगाहों और ओड़ीशा के चार बंदरगाहों पर 13128.39 टन मछली की लैंडिंग हुई थी (डायग्राम 3)। दक्षिण-पूर्व तट पर कुल 7181.95 टन मछली की लैंडिंग हुई जिसमें तमिलनाडु के नौ बंदरगाह और आंध्र प्रदेश के चार बंदरगाहों के आंकड़े दर्ज हैं।

तालिका-3 में हर क्षेत्र में पकड़ कर लाए गए पांच सबसे अधिक मत्स्य उत्पादों का उल्लेख है।

तालिका 3. जून, 2018 में हर क्षेत्र में उतारी गईं प्रमुख उत्पाद

उत्पाद	टनों में	क्षेत्र में उतारी गई मछली का %
दक्षिण पश्चिम		
इंडियन मार्कटेल	1671.00	45.82
श्रिम्प (पूवलान)	605.00	16.59
इंडियन स्कैड	424.10	11.63
स्क्विड	309.65	8.49
एनकोवी	297.79	8.17
दक्षिण पूर्व		
कटलफिश	974.38	13.57
टूना	699.01	9.73
स्क्विड	561.55	7.82
वाइट प्रान	392.19	5.46
ब्राउन श्रिम्प	337.13	4.69
उत्तर पूर्व		
क्रोएकर	1599.97	12.19
हिल्सा	1153.70	8.79
बॉम्बे डक	1036.07	7.89
सी क्रैब	813.33	6.20
श्रिम्प (करीकड्डी)	666.30	5.08

राज्यवार ब्योरा

जुलाई, 2018 में सबसे अधिक मत्स्य लैंडिंग पश्चिम बंगाल में हुई थी। पश्चिम बंगाल में 10795.15 टन मत्स्य की

लैंडिंग हुई थी इनकी हिस्सेदारी 45 फीसद थी (डायग्राम-4)। इसके बाद सबसे अधिक मत्स्य उत्पाद तमिलनाडु में 4492.25 टन दर्ज किए गए। इसके बाद केरल में 3646.94 टन मछली की लैंडिंग हुई। इस अवधि में मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगाए जाने के कारण कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात के आंकड़े नहीं मिल पाए।

तालिका 4 में जुलाई के दौरानप्रत्येक राज्य में लैंडिंग में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले पाँच प्रमुख मात्स्यिकी मद का वर्णन है।

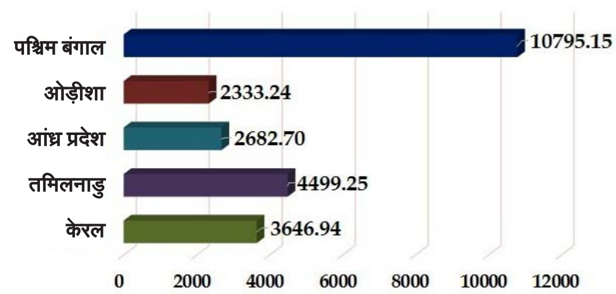

डायग्राम 4 - जुलाई, 2018 में पकड़ कर लाई गई मछली का राज्यवार ब्योरा (टन में)

तालिका 4. जुलाई 2018 में राज्यवार लैंड हुई मदें (टनों में)

उत्पाद	टनों में	राज्य में लाई गई मछली का %
केरल		
इंडियन मार्कटेल	1671.00	45.82
श्रिम्प (पूवालन)	605.00	16.59
इंडियन स्कैड	424.10	11.63
स्क्विड	309.65	8.49
एनकोवी	297.79	8.17
आंध्र प्रदेश		
टूना	459.04	17.11
वाइट प्रान	303.65	11.32
ब्राउन श्रिम्प	248.74	9.27
टाइगर प्रान	186.25	6.94
पिंक श्रिम्प	176.73	6.59
तमिलनाडु		
कटलफिश	819.30	18.21
स्क्विड	429.88	9.55
इंडियन ऑयल सेरडिन	293.22	6.52
इंडियन स्कैड	243.56	5.41
टूना	239.97	5.33
ओड़ीशा		
क्रोएकर	536.06	22.97
श्रिम्प (करीकाढ़ी)	270.18	11.58
टूना	164.55	7.05
इंडियन ऑयल सेरिडीन	155.22	6.65
सी क्रैब	136.30	5.84
पश्चिम बंगाल		
हिल्सा	1100.36	10.19
क्रोएकर	1063.91	9.86
बॉम्बे डक	995.60	9.22
सी क्रैब	677.03	6.27
रिबन फिश	520.69	4.82

संकेंद्रित क्षेत्र

बंदरगाहवार ब्योरा

तालिका 5 में इस माह के दौरान 26 बंदरगाहों पर लैंड हुई मछलियों के आंकड़े दर्शाए गए हैं। इनमें सबसे अधिक मछली पश्चिम बंगाल के देशप्रण बंदरगाह में 4877.87 टन (20%) लैंड हुई। इसके बाद कयाकुलम बंदरगाह में 2743.00 टन (11%) मछली लैंड हुई गई। सबसे कम मत्स्य उत्पाद थोपूमपडी बंदरगाह पर पहुंचा। इस बंदरगाह में इस अवधि में 2.90 टन मत्स्य।

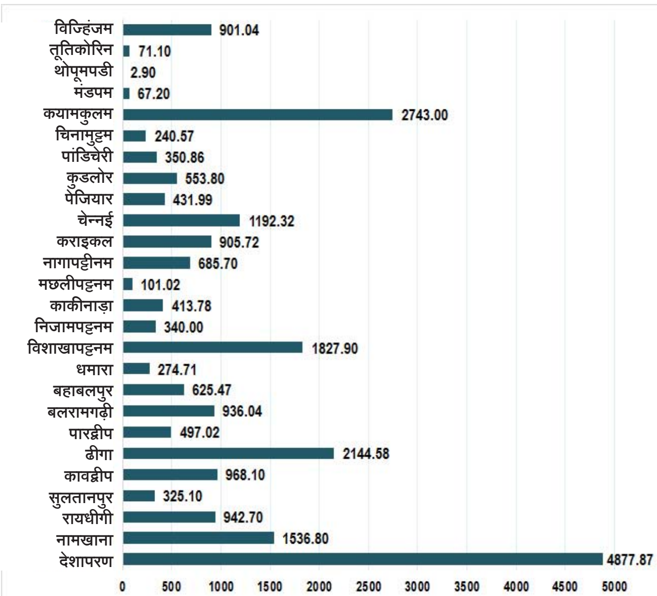

आकृति 5 : जून 2018 के दौरान पश्चिमी तट के पत्तनों में लैंडिंग (टन में)

बोट से लैंडिंग का मूल्यांकन

जुलाई, 2018 में कुल 11564 नौकाओं का आवगमन दर्ज किया गया। इसमें सबसे ज्यादा नौकाओं का आवगमन देशप्रण बंदरगाह (1395 बार) में हुआ। इसके बाद दूसरे नंबर पर सबसे ज्यादा नौकाओं का आगमन दीघा के शंकरपुर बंदरगाह पर 804 बार हुआ। बंदरगाह पर मछली पकड़ कर लाने वाली नौकाओं में 70 प्रतिशत मत्स्य नौकाएं ट्रालर श्रेणी की थीं और बाकी पर्स सीनर्स, गिल नेटर्स, लांग लाइनर्स और पारंपरिक नौकाएं थीं।

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 5 में जुलाई, 2018 और उससे पिछले महीने के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। जुलाई में मछली पकड़ने में 12000 टन की बढ़त दर्ज की गई। मछली की पकड़ के संयोजन के विश्लेषण से पता चलता है कि जुलाई में पेलाजिक फिन फिश का हिस्सा 8% बढ़ गया जबकि गहरे समुद्र में पाए जाने वाली मछली और शंखमीन का हिस्सा घट गया। मत्स्य उत्पादों में सबसे अधिक हिस्सा इंडियन मार्केल की दर्ज की गई। हालांकि पूवलन श्रिम्प, जैपनीज थ्रेड फिन बीम की लैंडिंग 1000 टन से कम रही। इस दौरान सबसे ज्यादा मत्स्य उत्पादों की लैंडिंग पश्चिम बंगाल में आई जबकि केरल तीसरे नंबर पर रहा। मत्स्य की सबसे ज्यादा लैंडिंग बंदरगाह देशप्रण पर हुई। बीते माह की तुलना में जुलाई में नौकाओं का आवगमन अधिक हुआ।

सारांश

जुलाई, 2018 में 26 प्रमुख बंदरगाहों पर कुल 23957.27 टन मत्स्य की लैंडिंग हुई। इस माह के दौरान मत्स्य उत्पादों में सबसे अधिक इंडियन मार्केल की हिस्सेदारी रही। पकड़े गए मत्स्य उत्पादों में से 85 प्रतिशत पूर्वी तट पर पकड़ कर लाए गए। इस दौरान पश्चिमी तट पर मछली पकड़ने पर प्रतिबंध था। इसिलिए पश्चिम बंगाल में सबसे अधिक मछली की खेप पकड़ कर लाई गई। पश्चिम बंगाल के देशप्रण बंदरगाह पर सबसे अधिक मछली पकड़ कर लाई गई और सबसे ज्यादा नौकाओं का भी आवगमन हुआ।

तालिका 5. आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण

	मई 2018	जून 2018	जुलाई 2018
कुल पकड़े गए मत्स्य उत्पाद	32,153.82 टन	11619.06 टन	23957.27 टन
पकड़ी गई महासागरीय फिनफिश	13,330.59 टन (41%)	4439.45 टन (38%)	11037.42 टन (46%)
पकड़ी गई गहरे समुद्री की फिनफिश	11,185.97 टन (35%)	2889.96 टन (25%)	4685.39 टन (20%)
पकड़ी गई शंखमीन	7,637.26 टन (24%)	4289.65 टन (37%)	8234.45 टन (34%)
सबसे ज्यादा पकड़ी गई प्रजाति	जैपनीज थ्रेड फिन बीम (17%)	पूवलन श्रिम्प (11%)	इंडियन मार्कटेल (10%)
पकड़ कर लाई मछलियों में अव्वल राज्य	कर्नाटक (35%)	केरल (35%)	पश्चिम बंगाल (45%)
पकड़ कर लाई गई मछलियों में अव्वल बंदरगाह	मंगलौर (18%)	कयाकुलम (16%)	देशापरण (20%)
नावों की कुल आवक	15,538	6,564	11,564

*कुल पकड़ का प्रतिशत

जीआईएफटी कल्चर से उत्पादित मत्स्य प्रदर्शन

एमपीईडीए प्रदर्शन कार्यक्रम से संग्रहित जीआईएफ़टी तिलापिया के साथ श्री यू सी महापात्र, उप निदेशक, क्षे पीआर भूबनेश्वर के साथ श्री बिसवाल, प्रदर्शनी फार्म के कृषक और अन्य अधिकारी

हाल के बरसों में मत्स्य पालन में सबसे बेहतर हुई चीजों में से एक है - आनुवांशिक उन्नत तिलपिया पालन (Genetically Improved Farmed Tilapia-GIFT)। तिलपिया को वैश्विक मछली माना जाता है क्योंकि इसके निर्यात की प्रचुर संभावनाएं हैं। साथ ही इसके वाणिज्यिक उत्पादन को किसान आसानी से अपना सकते हैं।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) के भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय ने अपने केंद्र में आनुवांशिक उन्नत तिलपिया पालन (जीआईएफटी) का प्रदर्शन करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किया। इसका ध्येय एमपीईडीए के शोध व विकास केंद्र राजीव गांधी जलकृषि केंद्र द्वारा विकसित मत्स्य पालन की वैज्ञानिक तकनीक को लोकप्रिय बनाना था।

जगतपुरसिंह जिले में तुलांग गांव के किसान सौरव कुमार बिस्वाल के तालाब में पहली बार इन मछलियों की पहली खेप प्राप्त की गई। दूसरी खेप इस योजना के दिशा-निर्देशों के तहत 2017-18 में प्राप्त की गई। इस किसान को जीआईएफटी कल्चर के लिए राज्य मत्स्य विभाग से स्वीकृति मिली थी।

श्री बिस्वाल का ताजे पानी का मछली पालन तालाब 6.8 हेक्टेयर का है। यह तालाब जगतसिंहपुर से मात्र 30 किलोमीटर दूर है। यह जगह लोगों के समक्ष कार्यक्रम आयोजित करने के लिए बेहद अनुकूल है। यहां तक सड़क मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है। क्षेत्र में विद्युतीकरण हो चुका है और इसका अपना 25 केवीए का ट्रांसफार्मर है। इसका 7.5 केवीए का डीजी सेट, वायु मुहैया करवाने के यंत्र और पंप भी हैं। बड़ी बात यह है कि श्री बिस्वाल को मछली पालन का अनुभव है। इन सुविधाओं के कारण इस मत्स्य पालन केंद्र को अपनी कई इकाइयों से जयंती रोहू पालने की स्वीकृति मिली है। यह स्वीकृति भुवनेश्वर के सीआईएफए ने दी है।

राज्य मत्स्य पालन ने वर्ल्ड फिश के सहयोग से ओड़ीशा के अलग-अलग जिलों के 36 मीठे पानी के तालाबों में आरजीसीए से जीआईएफटी के बीज मुहैया करवाए हैं। श्री बिस्वाल के पिछले सफल प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें 'वर्ल्ड फिश' द्वारा मत्स्य बीजों के संग्रहण के लिए अपना परामर्श दाता बनाए जाने की संभावना बलवती हुई।

अतिरिक्त आधारभूत संरचनाएं और तालाब तैयार करना

तालाब में जीव-जंतुओं से सुरक्षा के इंतजाम किए गए थे। जैसे केकड़े/मवेशियों व पक्षियों से बचाव के लिए बाड़ लगाना और उनकी मरम्मत करना। तालाब में दो 1 एचपी पैडल व्हील हवा वाले यंत्र 'एयरेटर' उचित जगह पर लगाए गए थे। समीपवर्ती नहर से तालाब के पंप हाउस तक पानी लाने का इंतजाम किया गया। बाड़ लगाने से पहले तटबंधों को दुरुस्त किया गया था और घास की कटाई की गई थी। तालाब को तैयार करने और पानी की गहराई सुनिश्चित करने के बाद तालाब में आठ हप्पा लगाए गए थे। तालाब में मछलियों का भोजन रखने की पर्याप्त जगह हो। पानी की गुणवत्ता की निगरानी की किट, बैलेंस, स्केल, रजिस्टर, तालाब के आंकड़ों को लिखने के लिए पुस्तिका आदि एमपीईडीए मुहैया करवाता है।

एमपीईडीए के भुवनेश्वर कार्यालय में उपनिदेशक श्री यू. सी. महापात्रा उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए

तालाब को सूखा कर, तली को दो बार जोत व, चूना डालने के बाद साफ किया हुआ पानी तालाब में भरा गया था। तालाब में 480 किलो चूना डालकर पीएच (6.70) को दुरुस्त किया गया। 60 से 80 मेश नेट (जाली) से पानी को साफ फिर इसे तालाब में चार फुट तक भरा गया। तकरीबन 300 किलोग्राम ब्लीचिंग पाउडर का इस्तेमाल किया गया जिससे तालाब में अवांछित छोटे जीव खत्म हो गए थे। हवा मुहैया करवाने वाले यंत्र 'एयरेटर' को क्लोरीन से साफ किया गया और फिर तीन दिन के लिए इसे छोड़ दिया गया। प्लवक (प्लैंकथन) को विकसित करने के लिए जैविक खाद डाली गई। जैविक खाद में चावल का तेल निकाली हुई 25 किलो भूसी, 25 किलो गुड़ और 500 ग्राम खमीर डाला गया। पानी की गहराई बढ़ाकर पांच फुट कर दी गई और डीओ, पीएच, पारदर्शिता, तापमान, अमोनिया और क्षारीयता की जांच की गई। यह तालाब सितंबर, 2017 के दूसरे सप्ताह में मत्स्य पालन के लिए तैयार हो गया था।

भंडारण

श्री बिस्वाल के एक हेक्टेयर के डब्ल्यूएसए तालाब में 2 से 3 सेंटीमीटर के 16000 नर जीआईएफटी बीज डाले गए थे। ये बीज विजयवाड़ा आरजीसीए से प्राप्त किए गए थे। इन्हें 20 घंटे की ड्राइव के बाद यहां लाया गया था। ये 46 पॉली बैग में लाए गए थे। इन बीजों को 17 सितंबर को आठ हप्पा में रखा गया ताकि ये वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर लें। बीजों को विजयवाड़ा से तालाब तक लाने के दौरान इनकी जीवित रहने की दर 99.5% रही थी जो बहुत ही अच्छी थी। इन बीजों को उसी तालाब में 23 दिन तक 8 हप्पा में रखा गया और फिर इन्हें 9 अक्टूबर को तालाब में छोड़ दिया गया। नर्सरी में पालने के दौरान पता चला कि 92 प्रतिशत बीज बच गए और इनका सामान्य वजन 10 ग्राम था।

तालाब का प्रबंधन और मछलियों को भोजन देना

आरजीसीए के मानदंडों के अनुकूल तालाब का प्रबंधन किया गया और मछलियों को भोजन मुहैया करवाया गया। शुरुआती दौर में हप्पा में मछलियों को 32% हाई प्रोटीन एल. वन्नामेई (L. vannamei) श्रिम्प छोटी-छोटी गोलियों में खाने के लिए मुहैया करवाया गया था। मछलियों को सुबह से शाम तक छह बार खाना दिया जाता था और इसे तालाब में छितराकर फेंका जाता था। इस दौरान मछली का विकास और उसकी सेहत की लगातार निगरानी की गई।

इसके बाद मछलियों को तालाब में छोड़ दिया गया और सबसे पहले उन्हें आईबी फ्लोटिंग 2 मिलीमीटर पैलेट खाने को मुहैया करवाया गया जिसमें 26% प्रोटीन था। इसके बाद 3 मिलीमीटर का भोजन मुहैया करवाया गया जिसमें 30% प्रोटीन होता था। फिर 4 मिलीमीटर का भोजन मुहैया करवाया गया जिसमें 24-26% प्रोटीन था। मछलियां के 100 ग्राम वज़न होने तक इन्हें दिन में दो बार भोजन मुहैया करवाया जाता था और इस दौरान इनका वजन रोजाना 2 से 3 ग्राम बढ़ता था। इसके बाद इनका वजन रोजाना 4 ग्राम बढ़ा था। तालाब में दो बार भोजन सुबह 6 बजे और शाम को 5 बजे मुहैया करवाया जाता था। एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग भुवनेश्वर के तकनीकी अधिकारियों ने नियमित रूप से तालाब का निरीक्षण किया। उन्होंने 15 दिन के अंतराल पर मछली के स्वास्थ्य और उसके विकास का निरीक्षण किया। मछलियों की इस खेप को पालने में 10.81 मीट्रिक टन भोजन मछलियों को करवाया गया।

भंडारण के शुरुआती दिनों में प्लवकों (प्लैंकटन) की देखभाल में समस्या आई थी, इसलिए डोलोमाइट और जैविक खमीर वाले घोल की अतिरिक्त डोज दी गई थी। मछलियों की बढ़ने की दर में उन्हें मुहैया करवाया गया भोजन प्रमुख भूमिका निभाता है। इसलिए तालिका के अनुसार ही उन्हें भोजन मुहैया करवाया गया था।

औसत वजन	भोजन की मात्रा (एबीडब्ल्यू %)
10 ग्राम	6.0
50 ग्राम	2.5
200 ग्राम	1.3
500 ग्राम	0.90
700 ग्राम	0.80

अधिकारियों ने दौरा कर पानी की गुणवत्ता, तालाब के तल की स्थिति और मछली की सेहत का निरीक्षण किया। मछली की इस पूरी खेप को तैयार करने के दौरान मछलियों में किसी बीमारी का प्रमाण नहीं मिला। मछलियों के सैम्पल तमिलनाडु स्थित सिरकाली के आरजीसीए की केंद्रीय पैथलॉजी लैब को भेजे गए थे। मछलियों को पालने के दौरान उनके विकास में अंतर था।

यह तालाब लोगों को प्रदर्शित किए जाने के लिए था। इस तालाब का दौरा मत्स्य/जीआईएफटी किसानों, प्रशिक्षुओं और मत्स्य विभाग के अधिकारियों, वर्ल्ड फिश के प्रतिनिधियों और सहायक प्रोजेक्ट मैनेजर, आरजीसीए आदि ने भी किया।

जीआईएफटी मछली के बीज के बारे में प्रशिक्षण

प्रदर्शन योजना के तहत तीन दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम तालाब के समीप 21 से 23 फरवरी, 2018 तक आयोजित हुआ जिसमें 20 किसानों ने हिस्सा लिया। इनमें से कई किसानों ने मत्स्य विभाग के जीआईएफटी बीजों का संग्रहण किया है।

विजयवाड़ा स्थित आरजीसीए की जीआईएफटी हेचरी के सहायक प्रोजेक्ट प्रबंधक श्री पी. श्रीनिवास राव और एमपीईडीए भुवनेश्वर के क्षेत्रीय प्रभाग के तकनीकी अधिकारियों ने मत्स्य

पालन की नई वैज्ञानिक तकनीकों पर कक्षाएं लीं। प्रायोगिक सत्र का संचालन श्रीनिवास राव ने किया। प्रशिक्षुओं को जीआईएफटी मत्स्य पालन पर अध्ययन सामग्री और पैम्फलेट मुहैया करवाए गए। अंतिम दिवस प्रशिक्षुओं को सम्मान समारोह के दौरान मानद राशि और प्रमाणपत्र मुहैया करवाए गए जिसमें जगतसिंहपरु के मत्स्य पालन विभाग के अधिकारी, वर्ल्ड फिश ओड़ीशा के प्रमुख डॉक्टर अरुण पधियार और कोलकाता स्थित सीआईएफआरआई के वैज्ञानिक उपस्थित थे।

उद्घाटन पैदावार

भुवनेश्वर स्थित एमपीईडीए के तकनीकी अधिकारों की दिशानिर्देश के तहत आठ महीने तक मछली का बीज विकसित किया गया। इसके लिए उद्घाटन कार्यक्रम 25 अप्रैल को आयोजित हुआ। बहरामपुर गंजम क्षेत्र के मत्स्य विभाग उपनिदेशक श्री एस. पी. भोई, सीआईएफए भुवनेश्वर के वैज्ञानिक डॉ अनंताराज, जगतसिंहपुर नाबार्ड के सहायक महाप्रबंधक श्री एस. पी. महापात्रा, जगतसिंहपुर के एलडीएम श्री ए.के. पटनायक, जगतसिंहपुर के एएफओ श्री प्रशांत पटनायक, और कटक वर्ल्ड फिश के एएफओ श्री बिसोई कार्यक्रम के अतिथि थे। इस हारवेस्ट के गवाह और 50 मत्स्य/श्रिम्प/जीआईएफटी अतिथि किसान थे। इसके बाद मत्स्य पालन का कार्यक्रम लोगों के समक्ष पेश किया गया।

जगतसिंहपुर नाबार्ड के के सहायक महाप्रबंधक श्री एस.पी. महापात्रा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

उपस्थित लोगों को इस कार्यक्रम के बारे में एमपीईडीए भुवनेश्वर के उपनिदेशक श्री उमेश चंद्र ने विस्तार से समझाया। श्री

बहरामपुर (गंजम जोन) के डीडीएफ श्री एस.पी. बहोई किसानों को संबोधित करते हुए।

बिस्वाल को इस बात के लिए धन्यवाद दिया गया कि उन्होंने एक हेक्टेयर क्षेत्र से 10 टन से अधिक मछली का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मदद और समन्वय किया। श्री महापात्रा ने दौरा करने वाले किसानों से अनुरोध किया कि प्रदर्शित किए गए जीआईएफटी के उत्पादन के तरीकों को अपने तालाबों में अपनाएं। उन्होंने आश्वासन दिया कि एमपीईडीए सभी तरह की तकनीकी मदद देगी। इसके अलावा उन्होंने श्री बिस्वाल के इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने की तारीफ की। श्री बिस्वाल को मत्स्य पालन का बीज प्रदर्शित करने के कार्यक्रम के कारण वर्ल्ड फिश का परामर्शदाता नियुक्त किया गया है। उन पर राज्य के विभिन्न जिलों के 36 किसानों को तकनीक सिखाने का दायित्व दिया गया है।

इस अवसर पर प्रदर्शित की गई प्रक्रिया, संभावित उत्पादन, सावधानियां और, प्रशिक्षण कार्यक्रम की अर्थव्यवस्था पर प्रपत्र (लीफलेट) जारी किया गया। इसे मेहमानों और प्रतिभागियों ने जारी किया।

भुवनेश्वर स्थित सीआईएफए के वैज्ञानिक डॉक्टर अनंताराज इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने जीआईएफटी कल्चर प्रोडक्शन के इतिहास, इमसें शामिल देशों, ब्रीडिंग के तरीके, हारमोन एप्लीकेशन, विकसित प्रजातियों से अधिक उत्पादन, तकनीक, नर्सरी आदि पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों से अनुरोध किया कि वे जीआईएफटी कल्चर पर एमपीईडीए/सीआईएफए से परामर्श लें। जीआईएफटी निर्यात की जाने वाली जिंस है। उन्होंने किसानों से अनुरोध किया कि वे अपने सोचने

का ढंग बदलें और अधिक धन कमाने के लिए जीआईएफटी को अपनाएं। साथ ही इसे स्थानीय बाजार में भी उपलब्ध करवाएं।

इस हारवेस्ट कार्यक्रम में बहरामपुर गंजम क्षेत्र के मत्स्य विभाग उपनिदेशक श्री एस. पी. भोई, जगतसिंहपुर नाबार्ड के सहायक महाप्रबंधक श्री एस. पी. मोहापात्रा, जगतसिंहपुर के लीड डिस्ट्रिक्ट मैनेजर श्री ए.के. पटनायक, कटक वर्ल्ड फिश के एएफओ श्री बिसोई, जगतसिंहपुर के अतिरिक्त मत्स्य अधिकारी श्री बिसोई, जगतसिंहपुर के अतिरिक्त मत्स्य अधिकारी प्रशांत

पटनायक, एमपीईडीए भुवनेश्वर के फील्ड सुपरवाइजर श्री एस. दुर्गा राव इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

श्री बिस्वाल ने अपने अनुभव को बयां किया। उन्होंने संगठनों का धन्यवाद दिया कि उनके तालाब का चयन किया गया। उन्होंने एमपीईडीए के दुर्गा राव का समय-समय पर दिशानिर्देशन के लिए भी धन्यवाद दिया। यह सभी लोगों ने कहा कि जब मत्स्य पालन का क्षेत्र बढ़ेगा तो उत्पादन बढ़ेगा। साथ ही उपलब्ध तकनीक से जीआईएफटी उत्पादन निकट भविष्य में बढ़ेगा। कहा गया कि समुद्र खाद्य निर्यातकों को जीआईएफटी उत्पादों का निर्यात बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाए और स्थानीय बाजार में निरंतर मछली की आपूर्ति की जाए। राज्य मत्स्य पालन विभाग ने भुवनेश्वर स्थित कौशलयागगंनगा के परिसर में जीआईएफटी हैचरी स्थापित करने के लिए कदम उठाए हैं। इसे जल्दी स्थापित कर किसानों को पर्याप्त मात्रा में जीआईएफटी बीज मुहैया करवाए जा सकेंगे।

कार्यक्रम के परिणाम

कार्यक्रम को प्रदर्शित करने में 5,71,130 रुपए खर्च हुए। इसमें तालाब बनाने की लागत, बॉयो सिक्योरिटी के विभिन्न तरीकों को दुरुस्त करना, सभी नर बीज, यातायात, मछली के खाने के लिए खास छोटी-छोटी गोलियां, ईंधन, पानी की टेस्टिंग किट, श्रम आदि। दूसरी क्राप की योजना के तहत इसका 75 फीसद खर्च एमपीईडीए ने वहन किया। कुल उत्पादन 9,928 किलोग्राम हुआ। इसमें 85 फीसद जीवित बची और इसमें हरेक का औसत वजन 730 ग्राम था। इस पैदावार की कीमत 95 रुपए किलो के हिसाब से 9,43,160 रुपए थी। इस क्राप के अर्थशास्त्र का संक्षिप्त वर्णन नीचे है।

खर्च		
क्रम संख्या	**मद**	**राशि (रुपए.)**
1	तालाब की तैयारी	17,280
2	बायो सिक्योरिटी	-
3	सभी नर जीआईएफटी बीजों की लागत (संख्या 16000)	41,350
4	बीजों की ढुलाई पर खर्च	20,460
5	नर्सरी के लिए हप्पा (संख्या 8)	-
6	छोटी छोटी गोली के आकार में तैरने वाला खाना (एफसीआर 1:1:2) ढुलाई सहित	419,720
7	मजदूरी	56,000
8	ईंधन और बिजली का खर्च	7,820
9	अन्य खर्चे	8,500
कुल		571,130
आमदनी		
1	कुल उत्पादन (9928 किलोग्राम), जीवित रहने की दर 85% (औसत वजन 730 ग्राम) @ 95/-रुपए प्रति किलो	943,160
2	1.0 हेक्टेयर से दूसरी पैदावार के प्रदर्शन के दौरान शुद्ध लाभ	372,030

कन्याकुमारी में जलकृषि की संभावनाएं

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगापट्टीनम एमपीईडीए के उप निदेशक श्री सी. विल्सन।

कन्याकुमारी की अद्भुत भौगोलिक स्थिति है। यह भारतीय पठार के मुहाने पर है और सभी तरफ से पश्चिमी घाट से घिरा हुआ है। इस स्थान को मीठे पानी के स्थलों का भी आशीर्वाद प्राप्त है जैसे नहरें, तालाब, झीलें और जलसंग्रह केंद्र। ये सभी मत्स्य पालन के लिए आदर्श स्थल हैं। लेकिन कन्याकुमारी में मत्स्य पालन की संभावनाओं का समुचित उपयोग नहीं हुआ है।

क्षेत्र में मत्स्यपालन की संभावनाएं खोजने व बेहतर बनाने के लिए तीन दिवसीय सामान्य प्रशिक्षण कार्यक्रम 'ईको फ्रैंडली एंड सस्टेनेबल डाइवर्सिफाइड एक्वाक्लचर' आयोजित हुआ। आयोजन नगापट्टीनम क्षेत्रीय डिवीजन एमपीडीईए ने नगरकोईल के सहायक निदेशक मत्स्य के कार्यालय में 26 से 28 जून तक चला। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कन्याकुमारी जिले के कुल 20 किसानों ने हिस्सा लिया।

तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन नगापट्टीनम क्षेत्रीय डिवीजन एमपीईडीए के उपनिदेशक श्री सी. विल्सन ने किया। इस अवसर पर नागरकोइल के सहायक मत्स्य निदेशक श्री टी. नटराजन, नगापट्टीनम एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री के. रेजी मैथ्यू और एमपीईडीए के सेवानिवृत्त सहायक निदेशक श्री रामास्वामी भी उपस्थित थे।

श्री सी. विल्सन ने सत्र में प्रशिक्षण में एमपीईडीए की भूमिका को उजागर किया। उन्होंने बताया कि कैसे एमपीईडीए मत्स्य पालन क्षेत्र के चयन, फार्म के विकास और मत्स्य पालन में अलग-अलग प्रजातियों की जरूरत को पूरा कर रहा है।

प्रतिभागियों का समूह।

सत्र को संबोधित करते एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री के. रेजी मैथ्यू।

श्री रेजी मैथ्यू ने सत्र में हैचरी व बीज उत्पादन, बीज के चयन, पैकेजिंग और ढुलाई के बारे में बताया। एमपीईडीए के सेवानिवृत्त सहायक निदेशक श्री रामास्वामी ने पहले दिन के समापन पर प्रजातियों के चयन व भारत में मत्स्य पालन के अलग-अलग तरीकों, मत्स्य पालन के लिए तालाब तैयार करने व बीज संरक्षण के बारे में बताया।

प्रशिक्षण के दूसरे दिन प्रतिभागीयों को मट्टूम में आरजीसीए की केज कल्चर यूनिट का दौरा करवाया गया। आरजीसीए के प्रोजेक्ट मैनेजर श्री दामोदरन प्रशिक्षुओं को मुट्टम तट के करीब समुद्र में पिंजड़े में बने मत्स्य पालन केंद्र में ले गए।

प्रशिक्षुओं की सुरक्षा के सभी इंतजाम किए गए थे। फाइबर की नाव में बैठकर पिंजड़े में मत्स्य पालन देखने गए काफी उत्साहित नज़र आ रहे थे। यह कई प्रशिक्षुओं के लिए बिल्कुल ही नया अनुभव था। एचपीडीई के पिंजड़ानुमा मत्स्य पालन केंद्र में कोबिया, पोम्पिनो थीं। श्री दामोदरन ने प्रशिक्षुओं को तकनीक, मत्स्य पालन के तरीके, प्रजातियों, इनके भोजन, तरह-तरह के पिंजड़ों, पिंजड़ों के लंगर और इनके देखरेख के बारे में बताया।

प्रशिक्षण के तीसरे दिन तिलापिया के पालन, सी बास और अन्य प्रजातियों के बारे में बताया गया।

आरजीसीए के परियोजना प्रभारी श्री जीयो क्रिस्टी ईपन, और नागरकोइल के मात्स्यिकी सहायक निदेशक श्री नटराजन ने प्रशिक्षुओं को राज्य सरकार की योजनाओं और मत्स्य पालन के दौरान मुहैया करवाई जाने वाली मदद के बारे में बताया। सहायक निदेशक श्री के. रेजी मैथ्यू ने मत्स्यपालन के तरीके और विपणन के बारे में बताया। उपनिदेशक श्री विल्सन ने मत्स्य पालन पर सामान्य पारस्परिक विचार-विमर्श का संचालन किया। समारोह में उपनिदेशक ने 20 प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र व मानद राशि प्रदान की। इस प्रशिक्षण का समापन सहायक निदेशक श्री मैथ्यू के. रेजी के संबोधन से हुआ।

कार्यक्रम का एक नजारा।

प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स के विरुद्ध जागरूकता अभियान

जन-जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन करते भीमावरम के विधायक पुलपार्थी रामनजनयेलु

मत्स्य पालन में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स के इस्तेमाल के विरुद्ध पश्चिमी गोदावरी जिले में भीमावरम मंडल के दिरुसुमुरु गांव में 27 जून को एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह आयोजन एमपीईडीए के सब रीजनल डिवीजन, भीमावरम के सौजन्य से हुआ।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य मत्स्य पालन व्यवसाय में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स के इस्तेमाल के खिलाफ जन-जागरूकता पैदा करना और किसानों को फार्म पंजीकरण स्मार्ट कार्ड वितरित करना था।

भीमावरम विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री पुलपार्थी रमनंजनयेल्लु ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस मौके पर किसानों व अधिकारियों सहित कुल 125 लोग उपस्थित थे। श्री रामनजनयेलु ने किसानों को पंजीकरण कार्ड भी वितरित किए।

अपने संबोधन में एमपीईडीए भीमावरम के सहायक निदेशक डॉ. पी. श्रीनिवासुलु ने एंटीबॉयोटिक्स की मौजूदगी के कारण यूरोपीय यूनियन की नामंजूरी के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन उद्योग में प्रतिबंधित एंटीबॉयोटिक्स का इस्तेमाल रोकने के लिए हर किसी को मिलजुल कर काम करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि इस साल के अंत तक फार्म पंजीकरण का कार्य संपन्न कर लिया जाएगा।

प्रतिबंधित दवाओं के इस्तेमाल का पता लगाने की क्षमता को महत्वपूर्ण बताते हुए डॉ. श्रीनिवासुलु ने कहा कि भावी पीढ़ियों के वास्ते मत्स्य पालन उद्योग बचा रहे, इसके लिए आवश्यक है कि एंटीबॉयोटिक्स का इस्तेमाल पूर्णतः समाप्त हो। उन्होंने बताया कि मत्स्य पालन गतिविधियों के कारण ही संपूर्ण तटवर्ती क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है को बढ़ावा मिला है। ऐसे में इस उद्योग का सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा उपाय जरूरी हैं।

डॉ. श्रीनिवासुलु ने पानी की गुणवत्ता और अन्य इनपुट्स के परीक्षण की अहमियत पर भी चर्चा की और मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए भीमावरम में अत्याधुनिक प्रयोगशाला स्थापित किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने भीमावरम में एमपीईडीए द्वारा प्रस्तावित एक्वा लैब के निर्णय का स्वागत करते हुए इसे एक सही कदम बताया और विश्वास दिलाया कि आंध्र प्रदेश सरकार इस दिशा में एमपीईडीए को हर प्रकार का सहयोग देगी।

भीमावरम विधानसभा क्षेत्र के माननीय विधायक पुलपार्थी रामनजनयेलु किसानों को फार्म-नामांकन स्मार्ट कार्ड वितरित करते हुए।

एएमसी, भीमावरम के अध्यक्ष कोल्ला नागेश्वर राव ने श्रिम्प के दामों में कमी तथा एंटीबॉयोटिक्स के कारण यूरोपीय यूनियन को निर्यात की मनाही के कारणों पर चर्चा की। उन्होंने सभी जल कृषकों से अपील की कि वे श्रिम्प निर्यात की बेहतरी के लिए एमपीईडीए में अपना पंजीकरण कराएं। श्री राव ने उपस्थित जनसमुदाय को बताया कि वह एमपीईडीए के एकीकृत कार्यालयी परिसर के निर्माण के लिए भीमावरम कृषि बाजार क्षेत्र में जमीन का आवंटन करेंगे।

मात्स्यिकी विभाग भीमावरम में उप निदेशक मात्स्यिकी डॉ. फानी प्रकाश ने एसआईएमपी के मद्देनजर एमपीईडीए के पंजीकरण कार्यक्रम में शामिल होने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए बनाई गई मत्स्य क्षेत्र और मात्स्यिकी विभाग की योजनाओं के बारे में भी बताया।

इस मौके पर संबोधित करने वालों में प्रगतिशील श्रिम्प किसान श्री बालकृष्ण और ट्रेनी फील्ड सुपरवाइजर (जीआईएस) एमपीईडीए श्री के. अंजैया भी थे।

कार्यक्रम के अंत में परस्पर बातचीत का भी सत्र चला जिसमें किसानों को मौका दिया गया कि वे अधिकारियों की मौजूदगी में अपने संदेह दूर कर सकें।

इसी तरह का कार्यक्रम 26 जून को पश्चिमी गोदावरी जिले में पलकोल्लू कृषि बाजार क्षेत्र में भी आयोजित किया गया जिसमें किसानों, व्यापारियों, टेक्नीशियनों और अधिकारियों समेत 103 लोगों ने भाग लिया।

इस मौके पर एमपीईडीए विजयवाड़ा के संयुक्त निदेशक श्री पी. अनिल कुमार ने वर्ष 2017-2018 में अमेरिका, यूरोपीय यूनियन और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों को निर्यात सी-फूड के आंकड़े प्रस्तुत किए। साथ ही, उन कारणों को भी रेखांकित किया जिनके चलते संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय यूनियन ने माल ठुकरा दिया। उन्होंने फार्म उत्पादों के विपणन को बिचौलियों से दूर रखने और अमेरिका के एसआईएमपी प्रोग्राम के क्रियान्वयन में एमपीईडीए के फिश एक्चेंज पोर्टल की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

मात्स्यिकी विभाग भीमावरम में उप निदेशक मात्स्यिकी डॉ. फानी प्रकाश, एमपीईडीए भीमावरम के सहायक निदेशक डॉ. पी. श्रीनिवासुलु, पलाकोल्लु एएमसी अध्यक्ष श्री जी. गांधी भागवन राजू, आंध्र प्रदेश एक्वा डीलर वेलफेयर एसोसिएशन के सचिव श्री जुंगा दास, एक्वा डीलर वेलफेयर एसोसिएशन पलाकोल्लु के सचिव श्री बी. चिन्ना बाबू, पश्चिमी गोदावरी जिले के मात्स्यिकी विभाग के सहायक निदेशक श्री पी. प्रसाद और एमपीईडीए भीमावरम के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री रामनजनयेलु ने भी इस मौके पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

श्री जुंगा दास ने कहा कि लगभग 95 प्रतिशत डीलर कृषि पृष्ठभूमि वाले हैं, लिहाजा प्रतिबंधित दवाओं के इस्तेमाल की संभावना बेहद कम है और एकसाथ काम करने से भी खतरा दूर किया जा सकता है। श्री चिन्ना बाबू ने एंटीबॉयोटिक्स के मुद्दे पर अभियान को अधिक मजबूती देने के लिए एमपीईडीए के तहत एक फोरम के गठन का सुझाव दिया।

होन्नावर में चिरस्थाई श्रिम्प पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

होन्नावर में मात्स्यिकी के सहायक निदेशक श्री नागराज ने अतिथि व्याख्यान दिया।

कार्की और पड़ोसी गांवों की ग्राम पंचायत द्वारा रखे गए अनुरोध के जवाब में एमपीईडीए ने उत्तर कन्नड़ जिले के होन्नावर स्थित कार्की गांव के पंचायत हॉल में 'चिरस्थाई श्रिम्प पालन और जलीय कृषि में विविधता' पर 24 से 26 जुलाई तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कार्की ग्राम पंचायत के अध्यक्ष श्री श्रीकांत मोगर ने किया। उन्होंने सुझाव दिया कि कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी फसल की योजना बना सकते हैं, उचित वित्त की व्यवस्था कर सकते हैं और स्थिरता के लिए पर्यावरण के अनुकूल जलीय कृषि का अभ्यास कर सकते हैं।

उद्घाटन समारोह

प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्थल चयन और तालाबों का निर्माण, तालाब की तैयारी, बीज संग्रहण, बीज और चारा प्रबंधन, जल गुणवत्ता प्रबंधन, जलीय कृषि खेतों में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स, कटाई तकनीक, एल.वन्नामेई खेती में जैव सुरक्षा और जलीय कृषि में विविधता, तिलपिया, सी बास (समुद्री बास मछली) आदि विषयों को शामिल किया गया।

प्रशिक्षण सत्रों का नेतृत्व उप निदेशक श्री विजयकुमार यारागल, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री जी. रामर और श्री एसएम शिरोडकर ने किया। कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री एसएम शिरोडकर ने बताया, हैचरी बीज प्रौद्योगिकी पर विशेष व्याख्यान मेसर्स अनुग्रह हैचरी के प्रबंधक श्री हेब्बार द्वारा दिया गया, जबकि एक्वा सोसाइटी के गठन, क्लस्टर श्रिम्प खेती और बीएमपी पर व्याख्यान नेशनल सेंटर फॉर सस्टेनेबल एक्वाकल्चर (नैकसा) के अधिकारी रबी गौड़ा और श्री साविम ने दिए। विभिन्न सत्रों में जीपीएस सर्वेक्षण, यूआईडी फार्म नामांकन का महत्व और एमपीईडीए की नई वित्तीय सहायता योजनाएं शामिल थीं।

श्रिम्प हेचरी क्षेत्र का मुआयना

मत्स्य पालन, होन्नावर सहायक निदेशक श्री सी. नागराज ने सरकार की योजनाओं के बारे में बताया।

संवाद सत्र के पश्चात प्रशिक्षुओं को बाड और कुम्ता गाँवों में स्थित श्री वासुदेव बेंदूर, मैसर्स वेस्ट कोस्ट, मैसर्स स्काईलाइन हैचरी व अन्य घर्मों का भ्रमण कराया गया।

प्रतिभागियों को एल. वन्नामेई श्रिम्प पालन केंद्र में नमूना, कास्ट नेटिंग, जल मापदंडों के परीक्षण की प्रत्यक्ष जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के सफल समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और मानद राशि दी गई।

चिरस्थाई जलकृषि के लिए बेहतर प्रबंधन अभ्यास

प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र और मानद शाही वितरित करते भीमावरम के उप क्षेत्रीय प्रभाग, एमपीईडीए के सहायक निदेशक डॉ. पी. श्रीनिवासुलु।

एमपीईडीए (भीमावरम) के उप क्षेत्रीय प्रभाग ने पश्चिम गोदावरी जिले के नरसापुरम मंडल के गोंडी गांव में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों के लिए 'जलकृषि के लिए बेहतर प्रबंधन अभ्यास' पर 23 से 27 जुलाई तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में कुल 20 प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा, कार्पडन का उद्देश्य स्थाई जलकृषि को सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधन के बेहतर तरीकों के बारे में जागरूकता पैदा करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन गोंडी गांव के सरपंच श्री एम. अंजनेयुलु ने किया।

फील्ड सुपरवाइज़र श्री एलके पटनायक ने बीएमपी, एमपीएमए की योजनाओं और सेवाओं के अलावा जलकृषि के विविधीकरण पर कक्षा ली, जबकि जूनियर टेक्निकल ऑफिसर श्री के. रामानजनेयुलु ने श्रिम्प पालन में रोग प्रबंधन और खाद्य प्रबंधन के बारे में बताया। श्री ए. वेंकट रमना, फील्ड मैनेजर नेशनल सेंटर फॉर सस्टेनेबल एक्वाकल्चर (नैकसा) ने जलीय समाज के गठन और इसके लाभों के बारे में बात की और श्रिम्प पालन में एम-कृषि ऐप पेश किए।

समापन के दिन, डॉ. पी. श्रीनिवासुलु ने कृषि नामांकन, मछली विनिमय पोर्टल और जलकृषि में एंटीबायोटिक मुद्दों के बारे में बात की। उन्होंने प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र और मानद शाही की वितरित। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सामग्रियों की कीमत पर भी एक ग्रुप चर्चा की गयी, जिसमें प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का नजारा।

आलंकारिक मत्स्य प्रजनन के लिए नेटवर्क कार्यक्रम का शुभारंभ

आलंकारिक मत्स्य उद्योग को विकसित करने के एक बड़े प्रयास के अंतर्गत आलंकारिक मत्स्य के प्रजनन से पालन तकअखिल भारतीय नेटवर्क की तैयारी है। इस दिशा में सात मात्स्यिकी की अनुसंधान संस्थानों ने एक अनुसंधान सहयोग परियोजना प्रारंभ की है।

इस संयुक्त अनुसंधान पहल का मुख्य उद्देश्य प्रजनन में पर्याप्त प्रौद्योगिकियों को विकसित करना, बीज उत्पादन और मीठा पानी एवं समुद्री आलंकारिक प्रजातियों के पालन के अलावा उद्योग की स्थिरता बनाए रखने में मदद करना है।

इस अवसर पर आईसीएआर के उप महानिदेशक जेके जेना ने भारत में आलंकारिक मछली सेक्टर में उपलब्ध संभावित संसाधनों का उपयोग करके शोधकर्ताओं और उद्योग भागीदारों के बीच एक मजबूत संबंध की आवश्यकता पर जोर दिया। नेटवर्क अनुसंधान परियोजना आलंकारिक मछली उद्योग के समक्ष खडे मुद्दों को देखेगी। यद्यपि भारत में आलंकारिक मछली व्यापार के विकास की बहुत संभावनाएं हैं, फिर भी विदेशी और घरेलू व्यापार को बढ़ावा देने के लिए उचित तंत्र को स्थापित किया जाना बाकी है। सरकार ने निर्यात बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र की पहचान विकास के लिए जोर देने वाले महत्वपूर्ण क्षेत्रों के रूप में की है। भारत में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के रीफ क्षेत्र, लक्षद्वीप द्वीपसमूह, मन्नार और कच्छ की खाड़ी क्षेत्र विविध समुद्री आलंकारिक मछली प्रजातियों से समृद्ध हैं। पश्चिमी घाट और उत्तर-पूर्व भारत की नदियों एवं नालों में आलंकारिक मछली की प्रचुर संपदा है।

सीएमएफआरआई के निदेशक ए. गोपालकृष्णन ने कहा, इस परियोजना में आलंकारिक मछली क्षेत्र के विकास के साथ मजबूत विपणन संबंध उद्देश्यों को भी शामिल किया गया है।

भुवनेश्वर में केंद्रीय मीठा जल मत्स्य पालन संस्थान (सीआईएफए), बैरकपुर में केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), लखनऊ में राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीएफजीआर), चेन्नई में केंद्रीय खारा पानी मत्स्य पालन संस्थान (सीआईबीए), मुंबई में केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (सीआईएफई) और उत्तराखंड के भीमताल में शीत जल मत्स्य अनुसंधान निदेशालय (डीसीएफआर) आदि ऐसे अनुसंधान संस्थान हैं जो नेटवर्क परियोजना में शामिल हैं।

- www.thehindubusinessline.com

THE MARINE PRODUCTS EXPORT DEVELOPMENT AUTHORITY (Ministry of Commerce & Industry, Government of India)
Head Office, MPEDA House, Building No: 27/1162, PB No:4272, Panampilly Avenue, Panampilly Nagar PO, KOCHI-682 036

एमएससी के अध्ययन से पता चला कि समुद्री खाद्य उपभोक्ता चिरस्थाईता की परवाह करते हैं, पर कीमत अब भी एक कारक है

शोध संस्था ग्लोबस्कैन ने 22 देशों के 25000 से अधिक उपभोक्ताओं का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में 72 प्रतिशत ने कहा कि वे सुपरबाजारों में चिरस्थाईता के दावों का निष्पक्ष सत्यापन चाहते हैं। 72 प्रतिशत का यह आंकड़ा 2016 में एमएससी के सर्वे के मुकाबले अधिक बड़ा है जिसमें ऐसा सत्यापन चाहने वाले ग्राहक 68 प्रतिशत थे।

शोधकर्ताओं ने पाया कि अधिकांश सी-फूड ग्राहक इस बात से सहमत थे कि वे समुद्र की हिफाजत के लिए चिर स्थायी स्रोतों से ही सी-फूड का उपभोग करना चाहेंगे। हालांकि यह भी पाया गया कि ग्राहक चिरस्थाईता के आगे कीमत को अधिक महत्व देते हैं।

मैरीन स्टीवर्डशिप काउंसिल के विपणन प्रमुख रिचर्ड स्टोबार्ट ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि इस सर्वे से पता चलता है कि उपभोक्ता वाकई महासागरों की परवाह करते हैं किन्तु वे किस प्रकार से मददगार हो सकते हैं, इस बारे में उनके बीच ऊहापोह की स्थिति है। यह पहले से भी ज्यादा आवश्यक हो गया है कि लोगों द्वारा चिरस्थाई समुद्री खाद्य को अपनाने केलिए ऐसा कोई उपाय किया जाये जिससे लोग औरों की अपेक्षा इसके महत्व को आसानी से समझ सकें। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कीमतों पर उपभोक्ता का अधिक ध्यान और शोध में यह पाया जाना कि विश्वभर में आधे से अधिक उपभोक्ता सप्ताह में एक बार सी-फूड खाते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि ग्राहकों के समक्ष उचित मूल्य के साथ स्थिरता के स्पष्ट विकल्पों वाली एक शृंखला है। हम यह देखकर खुश हैं कि ब्लू एमएससी लेबल पर सर्वाधिक भरोसा बरकरार है और हमारा भी ध्यान इस लेबल के प्रति यह समझ बनाए रखने पर है।

अध्ययन के अनुसार 69 प्रतिशत लोग ब्लू एमएससी लेबल पर भरोसा करते हैं और इस लेबल के प्रति समझदारी भी साथ-साथ बढ़ती जा रही है। वर्ष 2016 से 2018 में इस लेबल के प्रति लोगों का रुझान 32 प्रतिशत से बढ़कर 37 प्रतिशत तक पहुंच गया।

- www.seafoodnews.com

Subscription Order / Renewal Form

Please enroll me / us as a subscriber / renew my existing subscription of the MPEDA Newsletter. The subscription fee of Rs. 1000/- inclusive of GST for one year is enclosed vide local cheque/DD No..
dt........................ drawn in favour of The Secretary, MPEDA', payable at Kochi.
Please send the journal to the following address:

....

....

Tel No.. Fax : ....

E mail ....

For details, contact:
The Editior, MPEDA Newsletter, MPEDA House, Panampilly Nagar, Kochi - 682 036
Tel: 2311979, 2321722, Fax: 91-484-2312812. Email : newslet@mpeda.gov.in

मत्स्य व्यवसाय : फॉर्मेलिन और अमोनिया संदूषण का पता लगाने के लिए सीआईएफटी टेस्ट किट

हाईमीडिया लेबोरेटरीज के निदेशक विष्णु बारके को एमओयू की प्रति सौंपते आईसीएआर-सीआईएफटी के निदेशक डॉ. सी.एन. रविशंकर।

सीआईएफ टेस्ट-किट, आईसीएआर-सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज टेक्नोलॉजी, कोचीन द्वारा विकसित तेजी से पता लगाने वाला साजो-सामान है। यह व्यावसायिक उत्पादन के लिए मछली में रासायनिक परिरक्षकों फॉर्मेलिन और अमोनिया की उपस्थिति का पता लगाता है। इस तकनीक को मुंबई स्थित हाईमीडिया लेबोरेटरीज प्राइवेट लिमिटेड ने तैयार किया है। कोचीन में 4 जुलाई 2018 को एक सादे समारोह में आईसीएआर-सीआईएफटी, के साथ एमओयू का औपचारिक आदान-प्रदान हुआ। आईसीएआर-सीआईएफटी के निदेशक (सीएन) डा. रविशंकर ने कहा कि उपज और उपज के बाद मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए यह संस्थान प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्र में अग्रणी रहा है।

अनुसंधान किट का विकास सामान्य मछली उपभोक्ता की जरूरत को महसूस कर तैयार किया गया है। यह दूषित पदार्थो का पता लगाने और आशंकाओं को दूर करने के लिए है। हाईमीडिया लैबोरेटरीज के निदेशक श्री विष्णु वारके ने कहा कि कंपनी की 175 से अधिक देशों में उपस्थिति है और उसके पास उत्पाद को पर्याप्त मात्रा में उत्पादित करने का साधन है उत्पाद बहुत जल्द सस्ती दरों पर जनता के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने अपने उत्पादों को भारतीय और निर्यात बाजार में सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराने के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को दोहराया।

आईसीएआर-सीआईएफटी की वैज्ञानिक श्रीमती एस. लाली और श्रीमती ई.आर. प्रिया, जिन्होंने तेजी से पहचानने वाली किट रिकॉर्ड समय में विकसित की, को समारोह के दौरान सम्मानित किया गया। गुणवत्ता बीमा एवं प्रबंधन प्रभाग के प्रमुख डा. ए.ए. जेनुट्टीन ने सभा का स्वागत किया और संस्थान के प्रौद्योगिकी प्रबंधन ईकाई के प्रभारी डा, जॉर्ज नैनान ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

- सीआईएफ़टी

बैकवॉटर पर्यटन के लिए आईसीएआर-सीआईएफटी के रेफ्रिजरेटर युक्त मोबाइल फिश वैंडिंग कियोस्क

आईसीएआर-सीआईएफटी के रेफ्रिजरेटर युक्त मोबाइल फिश वैंडिंग कियोस्क का उद्घाटन कुमारकोम के मैसर्स पैराडाइज रिजार्ट में 13 जुलाई, 2018 को किया गया। यह अपनी तरह का पहला कियोस्क है और इसे हाउस बोट पर्यटकों के लिए विकसित किया गया है।

इस कियोस्क में मीठे पानी की मछलियां प्रदर्शित की जाती हैं। इसमें मछली काटने, साफ करने और बनाने की सुविधा भी होती है। इस यूनिट का उद्घाटन आईसीएआर-सीआईएफटी के निदेशक डॉ. सी. एन. रविशंकर ने किया। इस अवसर पर कुमरकम ग्राम पंचायत और होटल प्रबंधन के प्रतिनिधि उपस्थित थे। डॉ. रविशंकर ने अपने संक्षिप्त भाषण में मत्स्य क्षेत्र की संभावनाओं और इसके स्वास्थ्य व लोगों की आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डाला। आईसीएआर-सीआईएफटी के प्रधान वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख डॉ. मनोज एस. सैम्युल ने रेफ्रिजरेटर युक्त पहली फिश वैंडिंग कियोस्क के कार्य करने के ढंग पर प्रकाश डाला और इससे मत्स्य कारोबार से जुड़े लोगों और उद्यमियों को होने वाले लाभ के बारे में बताया। उन्होंने आईसीएआर-सीआईएफटी के सामान्य गतिविधियों और इसके लोगों से जुड़ाव के बारे में प्रकाश डाला।

मोबाइल रेफ्रिजरेशन युक्त फिश वैंडिंग कियोस्क को आईसीएआर-सीआईएफटी ने विकसित किया है। इसका ध्येय मीठे पानी की मछलियों की स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक और मार्केटिंग प्रैक्टिस को बेहतर करना है। इस कियोस्क की खासियत यह है कि इसमें मछली को प्रदर्शित करने और संग्रह करने की सुविधा है और इसका रेफ्रिजरेशन सिस्टम बेहतरीन है। इस यूनिट में ग्राहक पारदर्शी दीवार से मछलियों को देख सकता है और अपनी पसंद की मछली खरीद सकता है। इस कियोस्क में मछली के भंडारण की आदर्श स्थितियां हैं। इसीलिए मछली 4 से 5 दिन तक खराब नहीं होती है। इससे मछली बेचने वालों की कमाई बढ जाती है।

- सीआईएफ़टी

मछली की वैश्विक खपत अस्थिर : संयुक्त राष्ट्र

विश्व के कुल समुद्री क्षेत्र के एक तिहाई हिस्सा में अति मत्स्यन और मत्स्य की अधिक खपत स्थिति के कारण विश्व में करोडों लोगों के प्रोटीन के प्रमुख स्रोत की चिरस्थाईता पर खतरा मंडराने लगा है। इस आशय की चेतावनी संयुक्त राष्ट्र ने 9 जुलाई को जारी अपनी एक रिपोर्ट में दी है।

संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि खासकर विकासशील देशों में जहां कि अधिकांश लोग पहले ही पोषणयुक्त आहार की कमी से जूझ रहे हैं, अति मत्स्यन खराब बात है।

एएफओ के मात्स्यिकी और मत्स्य पालन विभाग के निदेशक मैनुअल बरांगे का कहना है कि समुद्री संपदा पर बहुत अधिक दबाव है। ऐसे में हम सरकारों से फिशरीज की स्थिति में सुधार के लिए अधिक वचनबद्धता की अपेक्षा करते हैं।

उन्होंने थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन से कहा कि ऐसा अनुमान है कि अफ्रीका को भी भविष्य में मछली का आयात करना पड़ेगा। मछली की कमी के कारण कीमतें बढ़ेंगी। जाहिर है इस स्थिति का गरीबों पर अत्यधिक विपरीत असर पड़ेगा।

श्री बरांगे ने कहा कि अफ्रीका में जलकृषि की बेहतर संभावनाएं हैं मगर वित्त, चारा और आपूर्ति के मामले में उसे सहयोग की जरूरत है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि मछली पालन और मछली फार्मिंग पिछले चालीस साल में सबसे तेजी से बढ़ता कृषि क्षेत्र है। ऐसे में मछली की उपलब्धता की बहुत बड़ी जिम्मेदारी इसी क्षेत्र के ऊपर है।

खुले समुद्र में मछली पकड़ना लगातार घटता जा रहा है, लिहाजा अधिकाधिक देश मछली फार्मिंग की ओर उन्मुख होने लगे हैं।

अल्जीरिया में सरकार किसानों को मरुस्थलीय क्षेत्र में मछली फार्मिंग के लिए प्रोत्साहित कर रही है ताकि किसानों की आमदनी के साथ-साथ मछली उत्पादन में भी वृद्धि हो।

हालांकि आलोचक कहते हैं कि मछली फार्मिंग से पर्यावरण को नुकसान पहुंच सकता है और बीमारियां फैल सकती हैं, लेकिन श्री ब्रांगे कहते हैं कि समुचित नियमन, निगरानी व नियंत्रण ही निदान है।

पारंपरिक तरीके से मछली मारने वाले देश भी आज फिशरीज को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि वे अपने यहां पोषाहार और भुखमरी की समस्या का मुकाबला कर सकें।

वैश्विक स्तर पर मत्स्य भंडार में अस्थिरता का स्तर 2013 में 31.4 प्रतिशत के मुकाबले 2015 में बढ़कर 33.1 हो गया। 1974 के मुकाबले यह 10 प्रतिशत बढ़ चुका है।

रिपोर्ट के मुताबिक, मछली की खपत में भी लगातार वृद्धि होती जा रही है। 1961 में प्रतिव्यक्ति 9 किलोग्राम के मुकाबले यह 20.2 किलोग्राम प्रति व्यक्ति हो चुकी है। जैसे-जैसे लोग सेहत के प्रति जागरूक होते जाएंगे, खपत और बढ़ने की संभावना है।

वर्तमान में 3.2 बिलियन लोग मांस आधारित प्रोटीन के लिए मछली पर निर्भर करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी संस्था 'वर्ल्डफिश' की शोध कार्यक्रम प्रमुख सुश्री शकुंतला थिलस्टेड कहती है कि नुकसान और बर्बादी को कम करके फिशरीज् को दीर्घकालीन स्थिरता की ओर ले जाया जा सकता है। इससे मछली पकड़ने वाले तरीके को 35 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि मछली के सिर और हड्डियों में सबसे अधिक पोषक तत्व होते हैं। हम आखिर इन्हें स्वादिष्ट आहार में परिवर्तित करने के नूतन तरीके क्यों नहीं खोजते!

- www.straitstimes.com

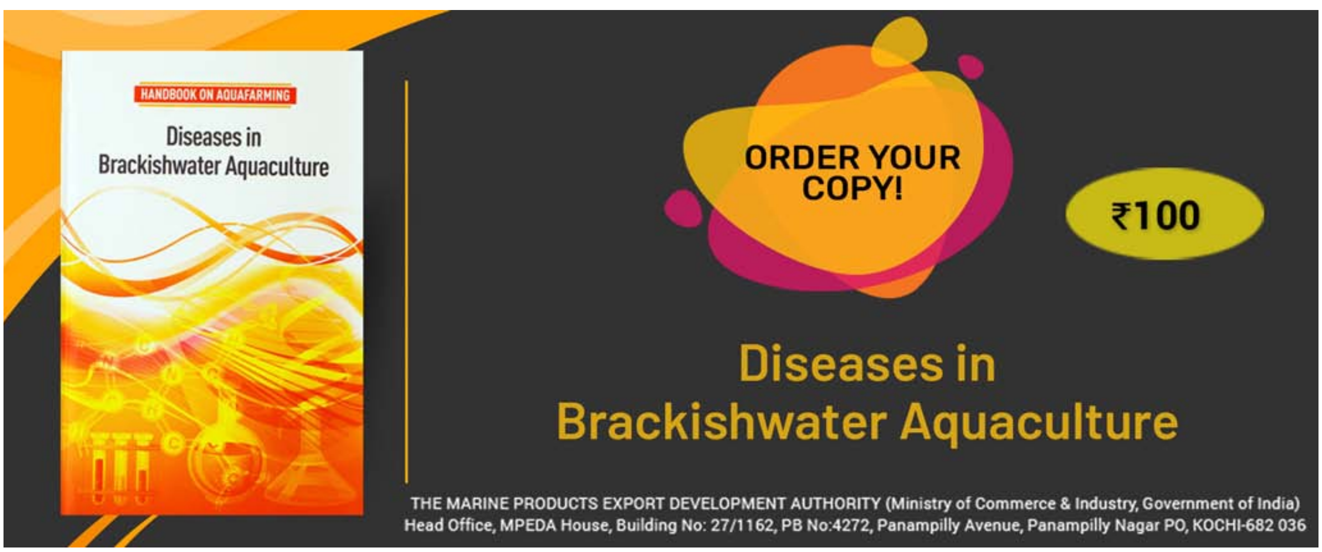

www.mpeda.gov.in

There's no seafood as Irresistible as Indian Seafood

From the sparkling Indian seas comes the finest seafood in the world. Enjoy it in abundance throughout the year.

You haven't tasted the best seafood, if you haven't tasted Indian seafood.

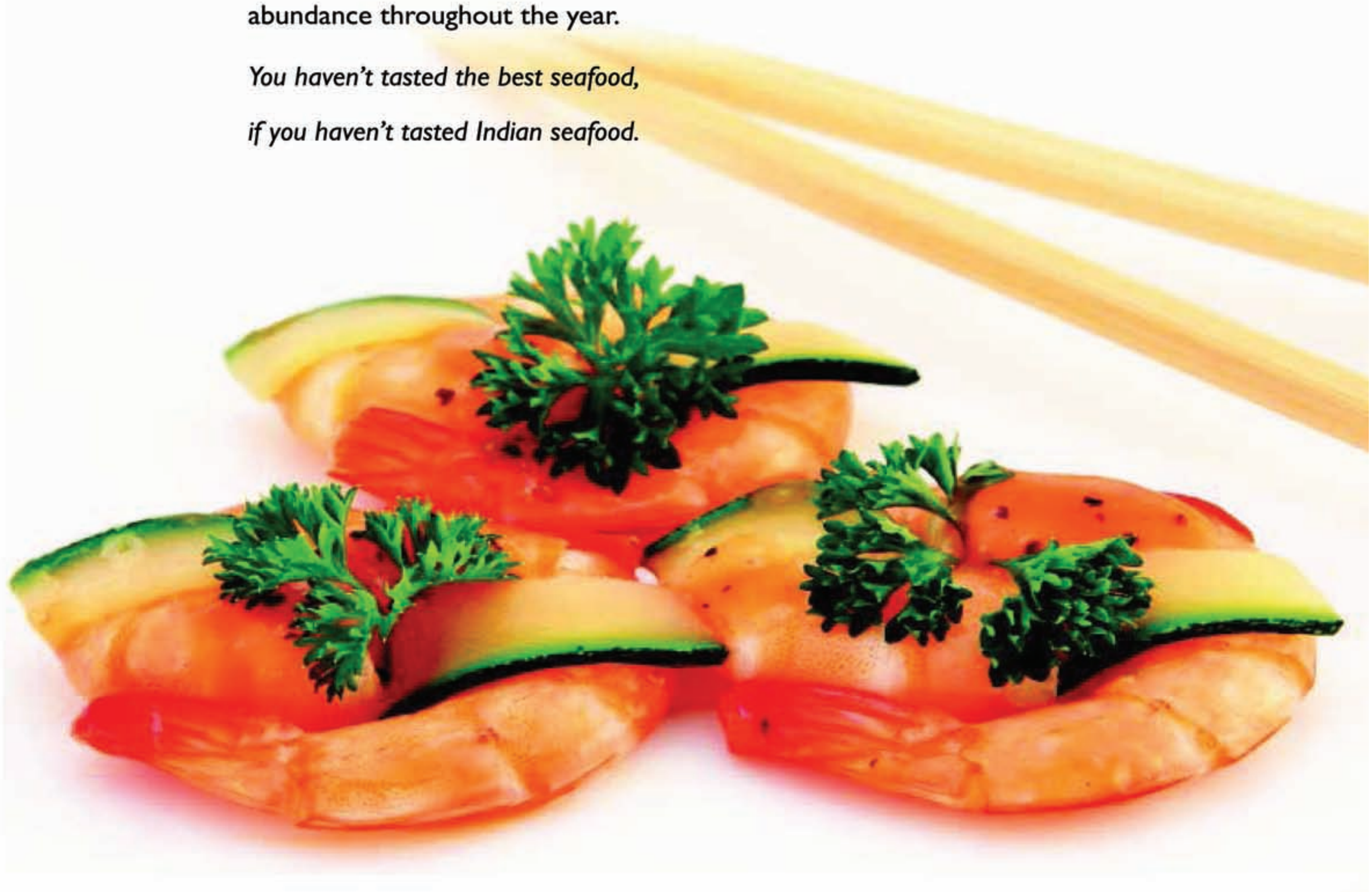

The Marine Products Export Development Authority
(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India
Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in

आईसीएआर-सीआईबीए ने पुडुचेरी के तटीय मछुआरों के साथ 10 जुलाई, 2018 को मनाया राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस

इस अवसर पर बात करते डॉक्टर रवि शंकर

आईसीएआर-सीआईबीए ने पुडुचेरी के तटीय मछुआरों के साथ 10 जुलाई, 2018 को राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाया। सीआईबीए के वैज्ञानिकों ने पुडुचेरी के मछुआरों और तटीय ग्रामीणों को कम लागत वाले तथा पर्यावरणीय हष्टिकोण से टिकाऊ मत्स्य पालन के तरीकों से खाद्य उत्पादन, रोजगार और आमदनी बढ़ाने के बारे में जागरूक किया। पर्यावरण के लिए टिकाऊ मत्स्य पालन के तरीकों के तहत समुद्र की गुफाओं में मछली पालन, पॉलीकल्चर और समन्वित मल्टी ट्रापिक्ल एक्वाकल्चर (आईएमटीए) के बारे में भी बताया गया।

इस परस्पर संवाद की अध्यक्षता पुडुचेरी के अतिरिक्त मत्स्य निदेशक थीरू के. देवसिंगमणि ने की। उन्होंने कहा कि विश्व बैंक समर्थित मत्स्य प्रबंधन विभाग के मत्स्य टिकाऊ आजीविका अभियान (फिशरीज मैनेजमेंट फॉर डिपार्टमेंट ऑफ फिशरीज सस्टेनेबल लाइवलीहुड-एफआईएमएसयूएल) के तहत गांव, जिला और राज्य स्तर पर आजीविका की सुरक्षा और क्षेत्र में मछुआरों को बढावा दिया जाता है। हालांकि इस अवसर पर मछुआरों ने कहा कि जलनिकायों में घरेलू कूड़ा-कचरा बहाए जाने और प्राइवेट टूर आपरेटरों के अनुचित दोहन के कारण नदियां प्रदूषित हो रही हैं।

मछुआरों ने अनुरोध किया कि मछलियों के प्रचुर स्त्रोत के रूप में नदियों को साफ सुथरा और इन्हें प्रदूषण से मुक्त रखा जाए ताकि वे मत्स्य क्षेत्र से जुड़ी आजीविका और उचित जलकृषि उत्पादन प्रणाली अपना सकें कायम रहे। केवीके पुडुचेरी के प्रमुख व कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. एस. वसंतकुमार ने कहा कि इस अभियान का ध्येय मछुआरों के लिए आय व मछलियों का उत्पादन बढ़ाना है। इसके लिए आईसीएआर संस्थानों द्वारा विकसित तकनीक सीआईबीए को भी अपनाया जाएगा। किसानों के बीच संवाद में यह बात निकल कर आई कि संस्थानों की मदद से विकसित की गई तकनीक का विस्तार किसानों के बीच किया जाना चाहिए। इस अवसर पर तमिलनाडु के कांचीपुरम जिले के मत्स्य कारोबारी श्री प्रेमकुमार ने सीआईबीए के प्रौद्योगिकी समर्थन के साथ सीबास की पिंजड़ा कृषिपर अपने अनुभवों को साझा किया। सीआईबीए के फिन फिश कल्चर संभाग के प्रधान वैज्ञानिक व साइंटिस्ट इनचार्ज डॉ. एम. कैलासम ने देश के पूर्वी और पश्चिमी तट पर खाद्य सुरक्षा बढ़ाने पर प्रकाश डाला।

- आईसीएआर-सिबा

उन्नत 'फिशिंग गियर' बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय मात्स्यिकी तकनीकी संस्थान के वेरावल अनुसंधान केन्द्र ने गियर संरचना तथा जाल मरम्मत व सुधार के लिए 28-31 जुलाई 2018 के दौरान सौराष्ट्र क्षेत्र के किसानों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया। इस कार्यक्रम के लिए धन की व्यवस्था राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद ने की थी। प्रारंभिक सत्र में अनुसंधान केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिक डॉ. टॉम्स सी. जोसेफ ने मछुआरों में कौशल व कार्यक्षमता के विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से मत्स्य क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों को लागू करने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. के.के. प्रजीत ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के कार्य क्षेत्र, उद्देश्य, सारिणी और संरचना के बारे में विस्तार से बताया। वेरावल अनुसंधान केन्द्र, आईसीएआर-सीएमएफआईआई के वैज्ञानिक डॉ. ए.के. झा और श्री विनय कुमार वासे ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अपनी सेवाएं दीं।

विभिन्न मछुआरा समुदायों के 25 मछुआरों ने प्रशिक्षण में हिस्सा लिया। इस दौरान विभिन्न सत्रों में विशेषज्ञों ने उत्तरदायित्वपूर्ण मत्स्यन की तकनीक, फिशिंग गियर संरचना की आधारभूत बातें, अनावश्यक जीवों के जाल में फंसने की संभावना में कमी लाने वाले उपकरण, उन्नत किस्म के गिलजाल और चौकोर सरंचना वाले जाल इत्यादि के बारे में विस्तार से समझाया। तकनीकी अधिकारी श्री एच.वी. पुंगेरा और श्री जे.बी. मलमाड़ी ने विभिन्न विधियों का व्यावहारिक प्रदर्शन किया। 31 जुलाई 2018 को समापन समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र बांटे गए।

- सीआईएफटी

आईसीएआर के स्थापना दिवस पर जलकृषि स्टार्टअप को बढ़ावा

फार्मिंग क्षेत्र में स्टार्टअप को प्रोत्साहन देने का उद्देश्य अविष्कार और उद्यमिता को बढ़ावा देना है ताकि यह क्षेत्र अधिक आकर्षक दिखे और तकनीकी कौशल से संपन्न हो। इस कड़ी में आईसीएआर-सीआईबीए ने 16 जुलाई 2018 को आईसीएआर के 90वें स्थापना दिवस को 'आईसीएआर औद्योगिक दिवस' के रूप में मनाया और इस उपलक्ष में 'जलकृषि सेक्टर में स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम' विषय पर गहन चिन्तन-मंथन वाली कार्यशाला आयोजित की।

इस कार्यशाला का अनूठा पहलू यह था कि इसमें आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के फिशरीज कॉलेजों के चुनिन्दा निवर्तमान विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया था कि वे मत्स्य पालन क्षेत्र में अपनी स्टार्ट-अप परियोजनाओं का मसौदा मात्स्यिकी उद्योग के विशेषज्ञों, एमपीईडीए, एनएफडीबी, एमएसएमई, सीआईआई, एफआईसीसीआई इत्यादि एजेंसियों, निवेशकों, स्टार्ट-अप्स, किसानों, प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों के पैनल के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें और तदनुसार समीक्षा व सुझाव प्राप्त कर सकें।

प्रस्तावों में शामिल थे- स्वच्छ पानी में मत्स्य पालन का किफायती धंधा, मूल्य संवर्धित उत्पाद और इसकी लेवलिंग, प्रमाणन और विपणन के अवसर, मत्स्य पालन टीकाकरण, शैवाल तकनीक, प्रोबॉयोटिक्स, ऑनलाइन सप्लाई प्रणाली, लॉट एण्ड एन्ड्राइड, अनुवांशिक उन्नत सजावटी मछली, जीवित मछली की विपणन प्रणाली और एकीकृत मत्स्य पालन प्रणाली इत्यादि।

तमाम प्रस्तावों पर विशेषज्ञों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। यह भी जानकारी दी गई कि बैंकों व अन्य वित्तीय ऐजेंसियों द्वारा वित्तीय सहायता के मद्देनजर आवेदन की समूची प्रक्रिया क्या है। संबंधित प्रोजेक्टों की तकनीकी खामियों और इन्हें दुरुस्त किए जाने के तरीकों पर भी बात की गई। इसके अलावा एनएफडीबी, एमएसएमई और एमईडीए के अधिकारियों ने जलकृषि के क्षेत्र में स्टार्टअप उद्यमों को प्रदान की जाने वाली विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में बताया।

कार्यशाला की अध्यक्षता सीआईबीए, चेन्नई के निदेशक डॉ. एस.वी अलवांडी ने की। उन्होंने मत्स्य पालन उद्योग के अनुमानों के आधार पर जानकारी दी कि आने वाले वर्षों में श्रिम्प का उत्पादन 6 लाख टन के आंकड़े को पार कर सकता है। इस प्रकार मत्स्य पालन और चारा क्षेत्र में नवोन्मेषों की स्थापना की अपार संभावना है।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि एफआईसीसीआई, चेन्नई के अतिरिक्त निदेशक श्री रुबन हॉबडे थे। उन्होंने भरोसा दिलाया कि मत्स्य पालन के क्षेत्र में नवोन्मेष परियोजनाओं को फिक्की हरसंभव सहायता देगा। कार्यशाला में राज्य मात्स्यिकी विभागों के अधिकारियों, एमपीईडीए, एनएफडीबी, एमएसएमई, सीआईआई, एफआईसीसीआई इत्यादि एजेंसियों के अधिकारियों, निवेशकों, नवोन्मेषों, प्रोफेसरों और विभिन्न राज्यों के फिशरीज विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया और विशेषज्ञों के साथ पैनल चर्चा में हिस्सा लिया। आईटीएमयू के ओआईसी डॉ. टी. रविशंकर और पीएलआईटीएमयू के सीओ डॉ. पी.के. पाटील समेत आईटीएमयू व सामाजिक विज्ञान प्रभाग के अधिकारियों ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

- आईसीएआर-सिबा

PRAWN FEED
AVANTI
FEEDS LIMITED
In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company
Aiding sustainability
& reliability to Aquaculture
MANAMEI
VANNAMEI FEED
FEED NO. 4
VANNAMEI FEED
SHRIMP FEED
PROFEED 4
BLACK TIGER
SHRIMP FEED
TITAN
PRAWN FEED
BLACK TIGER
SHRIMP FEED
Shrimp Hatchery
Feed Plant - Gujarat
Prawn Feed & Fish Feed
Prawn Processing & Exports
INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN
• GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
• LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY
AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS
AVANTI A.H.C.P. RANGE
Thai Union
IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD.,
Thailand.
Avant Miner Mate
Chelated Trace
Mineral Supplement
Avant Saldo Mixtos
Marine Mineral
Avant D-Flow
Water Quality Improver
Avant Pro W
Soil & Water Probiotic
Avant Bact
Gut Probiotic
Avant AmmoniAbsorb
Ammonia Absorber
Avant Life
Oxy-Generator
Avant Immupak
Immunity Enhancer
Avant Catcher
Corporate Office: Avanti Feeds Limited
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com
Regd. Office: Avanti Feeds Limited.
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

No. KERENG/2013/61656

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: **+44 20 74446320**
Email: **Raja.Chandnani@integrogroup.com**
www.Integrouk.com

INTEGRO UK
INSURANCE BROKERS